Edition : June 2022/004 Price : Free

मातृका MAATRIKA

A CORE SHARADA TEAM FOUNDATION INITIATIVE — REINCARNATION OF THE SHARADA SCRIPT

Download Our Free "Satisar" Andriod app

नमस्ते शारदे देवी काश्मीरपुरवासिनि
त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ॥

Inside :-

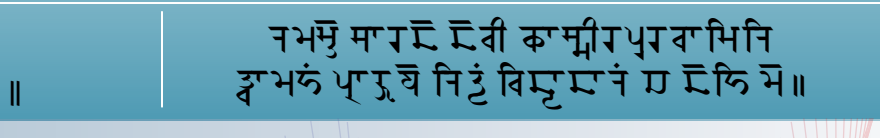

Page 1 — 1) Editor's Foreword.

Page 2 — 1) Saints of Kashmir by A.K. Razdan

Page 3 — 1) Isha Upnishad (Shaloka 2) by AK Razdan
2) A collection of Single verses by Shridharji Bhatt (Part 2)

Page 4 — 1) Poem by Master Zinda Kaul
2) Folk poem by Anonymous

Page 5 — 1) Kids Rhyms in Kashmiri.
2) Sharada Varanmala.
3) History of Sharada Lipi by Rakesh Koul.
4) Poem by Usha Munshi
5) Ma Saraswati Vandana by Akshita Damnia.

Page 6 — 1) A Dr Bhushan Kumar Kaul Deambi – India's Foremost Exponent on Sharada Script by Dr.Sushma Jatoo & Vineet Daembi

Page 7 — 1) Article contd.
2) Shastang Pranam by CST

Page 8 — 1) Ganpathyaar- Poem by Shiben Kishen Sadhu
2) Ksemarāja's Pratyabhijñāhṛdayam by Radha Raghunathan

Page 9 — 1) Asmakam by Bala

Page 10 — 1) Dinacharya by Savita Sajjan

Page 11 — 1) Sanskrti Sahatyavahini by Dr.Anitha

Page 12 — 1) Artwork for the month on Social media.
2) Donation appeal.
3) Contact Details.
4)Activity Chart of previous month.
5) Reader's Feedback

NEW BATCH STARTING SOON

LEARN SHARADA TEACH SHARADA

संस्कृति और सभ्यता को जानने की एक पहल

PRESERVE-PROTECT - PROPAGATE

Chief Editor:- Kuldip Dhar
Cover picture :- Savi Bhat
Designed by Sunil Mahnoori
Supporting Editors :- Veronica Peer, Parul Bradu

By:- Kuldip Dhar

Editorial

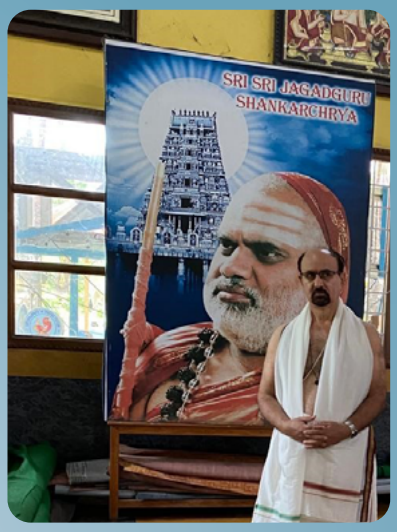

कोर शारदा समूह को यह बताते हुए हर्ष हो रहा है हमने कश्मीरी भाषा के लिये शारदा लिपि में प्रवेशिका (प्राइमर) तयार किया है जिस की प्रतियाँ प्रकाशित हो रही हैं। आशा है कि इनका प्रयोग प्राथमिक विध्यालयों में कश्मीरी सिखाने के लिये किया जायेगा । इस का विधिवत उद्घाटन बहुत ही शीघ्र किया जायेगा।

कई विद्वानों के सुझाव पर हम ने मालिका का नाम अब मातृका कर दिया है ।

शारदा लिपि , सी एस टी के अतिरिक्त विभिन्न संस्थाओं के प्रयत्नों के कारण, अब लोकप्रिय हो रही है और कई विश्वविद्यालयों ने डिप्लोमा के कोर्स आरम्भ किये हैं।

मई माह में कोर शारदा समूह की ओर से शारदा पीठ शेरिंगेरी में माता शारदा के मनमोहक दर्शन हुए। शंकराचार्य के दर्शन भी प्राप्त हुए । उनहों ने कोर शारदा समूह के प्रयासों को सराहा ओर अपना आशीर्वाद भी दिया।

कोर शारदा समूह को यह बताते हुए हर्ष हो रहा है हमने कश्मीरी भाषा के लिये शारदा लिपि में प्रवेशिका (प्राइमर) तयार किया है जिस की प्रतियाँ प्रकाशित हो रही हैं। आशा है कि इनका प्रयोग प्राथमिक विध्यालयों में कश्मीरी सिखाने के लिये किया जायेगा । इस का विधिवत उद्घाटन बहुत ही शीघ्र किया जायेगा।

कई विद्वानों के सुझाव पर हम ने मालिका का नाम अब मातृका कर दिया है ।

शारदा लिपि , सी एस टी के अतिरिक्त विभिन्न संस्थाओं के प्रयत्नों के कारण, अब लोकप्रिय हो रही है और कई विश्वविद्यालयों ने डिप्लोमा के कोर्स आरम्भ किये हैं।

मई माह में कोर शारदा समूह की ओर से शारदा पीठ शेरिंगेरी में माता शारदा के मनमोहक दर्शन हुए। शंकराचार्य के दर्शन भी प्राप्त हुए । उनहों ने कोर शारदा समूह के प्रयासों को सराहा ओर अपना आशीर्वाद भी दिया।

काश्मीर के महान सन्तों की श्रृंखला में इस मातृका में प्रकाशराम कुरीगामी (कश्मीरी रामायण के रचयता)

By:- A.K.Razdan

श्री प्रकाश राम का जन्म १८१९ ई० में कुरीगाम, ज़िल्ला कुलगाम में हुआ था। बालक प्रकाशराम कीशब्द रचना एवं स्मरण शक्ति आश्चर्यजनक थी अत: अल्प आयु में ही कश्मीरी एवं फार्सी भाषा में कविता करने लगे थे। इन का पूरा नाम श्री दिवाकर प्रकाश भट्ट था मगर वे कवि के रूप में प्रकाश राम के नाम से ही प्रसिद्ध हुए। कशमीरी रामायाण " रामावतारचरित" उनकी प्रख्यात रचना एवं कश्मीर भाषा में लिखा पहला महा काव्य माना जाता है। भक्त कवियों में इनकी गणना प्रसिद्ध राम भक्तों में होती है। इन के " रामावतारचरित " में रामायण के मूल कथा से कई प्रसंगों में बहुत सारे परिवर्तन किए गये हैं। जटायु मरण का विवरण इन्होंने मूल कथा से बिल्कुल अलग तरीक़े से वर्णन क्या है।

पथर प्यव पर च़टिथ छुस न छोरान वन्यस क्याह रावुनस छुन चोंट फोरान।
दोपुस सीताय कर फ़रियाद ज़िन्द छोरी च़्य च़टिथस पर तम्युक पादाश होरी ॥

इन का रामायण काश्मीर के भौगोलिक, ऋतुओं, पक्षियों एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में वर्णित है। रामजी के वनवास होने पर माता कौशल्या के विलाप का वर्णन करते हुए श्री प्रकाशराम ने गंगबल यात्रा मेंआने वाले सारे प्रसिद्ध स्थानों का वर्णन बहुत ही सुन्दर तरीक़े से प्रस्तुत किया है...

वन्दयो मोञ्य ब पादन छ़ारथो राम रादन।
महालिश किञ यिमयो हरमोख वञ्यि दिमयो हंसद्वार गछ़ित रटय वन। छ़ारथो राम रादन।
च़ रूदहम कथ शाये क्रेंकनदी वोठ बु लाययें गंगबल युव छु लादन। छ़ारथो राम रादन।
बरञ्बिल युथ न रावय राम राम क्रख ब त्रावय आलव दिज़्यस वादन। छ़ारथो राम रादन ॥

एक और जगह वे काश्मीर के वसंत ऋतु की अद्भुत सुन्दरता का वर्णन करते हैं...

आव बहार बोज़ बुलबुलो सोन वलो बरयो शांदी।

द्राव कठुकोश ग्रज़ू पाद छलो ज़रु बु क्यथो वन्दु की दांदी,वुज़ू न्यन्दुरे वुन्यि हा छय सुलो।

.....सोन वलो

काव कुम्युर बेयि हा पोशुनूलो, आयि नालान ज़न फ़रियांदी।
बोसु करान छय हा सुमबलो, सोन वलो बरयो शांदी।
सोन्थ आव तय नब गव खुलो, बुतुरांच़ु प्यठ च़ोल फसांदी।
टेंकुबटुनि तय विरकेम्य फलो, सोन वलो बरयो शांदी।

दूसरे कशमीरी कवियों की अपेक्षा प्रकाशराम ने अपनी कविताओं में संस्कृत एवं फार्सी के शब्दों का उपयोग बहुत कम किया है। रामावताचरित में इनकी कविताएँ आज भी कश्मीरयों के घरों में बहुतप्रचलित हैं। श्री प्रकाश राम का देहावसान १८८५ ई० को हुआ।

वंदुयो मॅन्य बु पादन छ़ान्डथो रामुरादन।
व्यच़ारनाग वति लारय, नुनरुकि तारु प्रारय ब्रमु सरु किन्य दिमय कन, छ़ान्डथो रामु रादन।
अंछन हुन्दि गाशु म्याने, खॅश यिवनि नुन्दु बाने कांल्य रांवुम हिय्ये तन छ़ान्डथो रामुरादन।
कशि तीर लोयथम मे लशि छम नारुन्य रेह अशि फेर्यन हुरुम तन छ़ान्डथो रामुरादन।
महालिशि किन्य यिमयो हरुमॅखु वंन्य दिमयो हम्सु दारु गछ़िथ रटय वन छ़ान्डथो रामुरादन।
च़ु रूदुहांम कथ शाये क्रेन्कु नंदि वॅठ बु लायय गंगु बल युन छु आदन छ़ान्डथो रामुरादन।
गोसु नो केंह मे चोनुय दयन येलि बानु ज़ोनुय चारु नो लांन्य वादन छ़ान्डथो रामुरादन।

श्री प्रकाश राम का जन्म १८१९ ई० में कुरीगाम, ज़िल्ला कुलगाम में हुआ था। बालक प्रकाशराम कीशब्द रचना एवं स्मरण शक्ति आश्चर्यजनक थी अत: अल्प आयु में ही कश्मीरी एवं फार्सी भाषा में कविता करने लगे थे। इन का पूरा नाम श्री दिवाकर प्रकाश भट्ट था मगर वे कवि के रूप में प्रकाश राम के नाम से ही प्रसिद्ध हुए। कशमीरी रामायाण " रामावतारचरित" उनकी प्रख्यात रचना एवं कश्मीर भाषा में लिखा पहला महा काव्य माना जाता है। भक्त कवियों में इनकी गणना प्रसिद्ध राम भक्तों में होती है। इन के " रामावतारचरित " में रामायण के मूल कथा से कई प्रसंगों में बहुत सारे परिवर्तन किए गये हैं। जटायु मरण का विवरण इन्होंने मूल कथा से बिल्कुल अलग तरीक़े से वर्णन क्या है।

पथर प्यव पर च़टिथ छुस न छोरान वन्यस क्याह रावुनस छुन चोंट फोरान।
दोपुस सीताय कर फ़रियाद ज़िन्द छोरी च़्य च़टिथस पर तम्युक पादाश होरी ॥

इन का रामायण काश्मीर के भौगोलिक, ऋतुओं, पक्षियों एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में वर्णित है। रामजी के वनवास होने पर माता कौशल्या के विलाप का वर्णन करते हुए श्री प्रकाशराम ने गंगबल यात्रा मेंआने वाले सारे प्रसिद्ध स्थानों का वर्णन बहुत ही सुन्दर तरीक़े से प्रस्तुत किया है...

वन्दयो मोञ्य ब पादन छ़ारथो राम रादन।....
महालिश किञ यिमयो हरमोख वञ्यि दिमयो हंसद्वार गछ़ित रटय वन। छ़ारथो राम रादन।
च़ रूदहम कथ शाये क्रेंकनदी वोठ बु लाययें गंगबल युव छु लादन। छ़ारथो राम रादन।
बरञ्बिल युथ न रावय राम राम क्रख ब त्रावय आलव दिज़्यस वादन। छ़ारथो राम रादन ॥

एक और जगह वे काश्मीर के वसंत ऋतु की अद्भुत सुन्दरता का वर्णन करते हैं...

आव बहार बोज़ बुलबुलो सोन वलो बरयो शांदी।

द्राव कठुकोश ग्रज़ू पाद छलो ज़रु बु क्यथो वन्दु की दांदी,वुज़ू न्यन्दुरे वुन्यि हा छय सुलो।

.....सोन वलो

काव कुम्युर बेयि हा पोशुनूलो, आयि नालान ज़न फ़रियांदी।
बोसु करान छय हा सुमबलो, सोन वलो बरयो शांदी।
सोन्थ आव तय नब गव खुलो, बुतुरांच़ु प्यठ च़ोल फसांदी।
टेंकुबटुनि तय विरकेम्य फलो, सोन वलो बरयो शांदी।

दूसरे कशमीरी कवियों की अपेक्षा प्रकाशराम ने अपनी कविताओं में संस्कृत एवं फार्सी के शब्दों का उपयोग बहुत कम किया है। रामावताचरित में इनकी कविताएँ आज भी कश्मीरयों के घरों में बहुतप्रचलित हैं। श्री प्रकाश राम का देहावसान १८८५ ई० को हुआ।

वंदुयो मॅन्य बु पादन छ़ान्डथो रामुरादन।
व्यच़ारनाग वति लारय, नुनरुकि तारु प्रारय ब्रमु सरु किन्य दिमय कन, छ़ान्डथो रामु रादन।
अंछन हुन्दि गाशु म्याने, खॅश यिवनि नुन्दु बाने कांल्य रांवुम हिय्ये तन छ़ान्डथो रामुरादन।
कशि तीर लोयथम मे लशि छम नारुन्य रेह अशि फेर्यन हुरुम तन छ़ान्डथो रामुरादन।
महालिशि किन्य यिमयो हरुमॅखु वंन्य दिमयो हम्सु दारु गछ़िथ रटय वन छ़ान्डथो रामुरादन।
च़ु रूदुहांम कथ शाये क्रेन्कु नंदि वॅठ बु लाययें गंगु बल युन छु आदन छ़ान्डथो रामुरादन।
गोसु नो केंह मे चोनुय दयन येलि बानु ज़ोनुय चारु नो लांन्य वादन छ़ान्डथो रामुरादन।

By :- A.K.Razdan

श्री ईशावास्य उपनिषद् (द्वितीय मंत्र)/ श्री ईशावास्य उपनिषद् (द्वितीय मंत्र)

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतगं् समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥२॥

"यदि मनुष्य इस प्रकार निरन्तर कार्य करता रहे (जैसा पहले मंत्र में बताया गया है), तो वह सौ वर्षों तक जीने की आकांक्षा कर सकता है (जिजीविषेत्), क्योंकि इस प्रकार का कार्य उसेकर्म के नियम से नहीं बाँधेगा। मनुष्य के लिए इसके अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग नहीं है ।"

जीवात्मा स्वभावत: शाश्वत है, अपितु भौतिक जगत में अपनेबन्धन के कारण उसे बारम्बार अपना शरीर बदलना पड़ता है। यदि हम अपने नियत कर्तव्यों के अनुसार कार्य नहीं करेंगे तोवह प्रकृति के नियम का उल्लंघन होगा जिस के कारण हम अनेक योनियों में जन्म-मृत्यु के चक्र में बंधते जाएँगे। बुद्धिमान पुरुष यह भलीभाँति जानते हैं कि अच्छे या बुरे कार्य समान रूपसे मनुष्य को भौतिक कष्टों से बाँधने वाले हैं, अतएव वे ऐसा कार्य खोजते हैं जो उन्हें अच्छे या बुरे दोनों ही प्रकार के कार्य के फलों से मुक्त कर दें। ईशावास्य उपनिषद् के पृष्ठों में इसीमुक्ति प्रदान करने वाले कार्य का वर्णन किया गय् है। मनुष्यको तब तक नैष्कर्म्य अवस्था प्राप्त नहीं होती जब तक वहवैदिक साहित्य में वर्णित स्वधर्म का आचरण नहीं करता। वेद/ वेदान्त के नियमों के अनुसार जिवन यापन करने से धीरे धीरे ईश्वरीय सत्ता का अनुभव होने लगता है। इस सकारात्मक ज्ञान की अवस्था में प्रक्रति के गुण (सतो, रजो, तमो गुण) कार्य नहीं कर पाते और इस में नैषकर्म्य के आधार पर कर्म करने की क्षमता आ जाती है। ऐसा कर्म मनुष्य को जन्म तथा मृत्यु के चक्र से नहीं बाँधता। ऐसी भावना से कर्म कर के हम अनेकों वर्षों (शतायु - १०० वर्षों) तक स्वस्थ जीवन जी सकते हैं (शतगं समा: एव)।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतगं् समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥२॥

"यदि मनुष्य इस प्रकार निरन्तर कार्य करता रहे (जैसा पहले मंत्र में बताया गया है), तो वह सौ वर्षों तक जीने की आकांक्षा कर सकता है (जिजीविषेत्), क्योंकि इस प्रकार का कार्य उसेकर्म के नियम से नहीं बाँधेगा। मनुष्य के लिए इसके अतिरिक्त कोई दूसरा मार्ग नहीं है।"

जीवात्मा स्वभावत: शाश्वत है, अपितु भौतिक जगत में अपनेबन्धन के कारण उसे बारम्बार अपना शरीर बदलना पड़ता है। यदि हम अपने नियत कर्तव्यों के अनुसार कार्य नहीं करेंगे तोवह प्रकृति के नियम का उल्लंघन होगा जिस के कारण हम अनेक योनियों में जन्म-मृत्यु के चक्र में बंधते जाएँगे। बुद्धिमान पुरुष यह भलीभाँति जानते हैं कि अच्छे या बुरे कार्य समान रूपसे मनुष्य को भौतिक कष्टों से बाँधने वाले हैं, अतएव वे ऐसा कार्य खोजते हैं जो उन्हें अच्छे या बुरे दोनों ही प्रकार के कार्य के फलों से मुक्त कर दें। ईशावास्य उपनिषद् के पृष्ठों में इसीमुक्ति प्रदान करने वाले कार्य का वर्णन किया गय् है। मनुष्यको तब तक नैष्कर्म्य अवस्था प्राप्त नहीं होती जब तक वहवैदिक साहित्य में वर्णित स्वधर्म का आचरण नहीं करता। वेद/ वेदान्त के नियमों के अनुसार जिवन यापन करने से धीरे धीरे ईश्वरीय सत्ता का अनुभव होने लगता है। इस सकारात्मक ज्ञान की अवस्था में प्रक्रति के गुण (सतो, रजो, तमो गुण) कार्य नहीं कर पाते और इस में नैषकर्म्य के आधार पर कर्म करने की क्षमता आ जाती है। ऐसा कर्म मनुष्य को जन्म तथा मृत्यु के चक्र से नहीं बाँधता। ऐसी भावना से कर्म कर के हम अनेकों वर्षों (शतायु - १०० वर्षों) तक स्वस्थ जीवन जी सकते हैं (शतगं समा: एव)।

By :- Shridharji Bhatt

A collection of scriptures in single verse

All of us know - In Hinduism there are many big and famous Indic Texts like - Ramayana, Mahabharata and Bhagavata etc. Here such big scriptures are given in just one verse each. All the four verses are written in shardula vikridita / शार्दूल विक्रीडित वृत्: - Varna/ वर्ण chandas. We will have a look at all of them in our upcoming editions.

सुन्दरकाण्डम् ||

यस्य श्रीहनुमाननुग्रहबलात् तीर्णाम्बुधिर्लीलया
लङ्कां प्राप्य निशम्य रामदयितां भङ्क्त्वा वनं राक्षसान् |
अक्षादीन्विनिहत्य वीक्ष्य दशकं दग्ध्वा पुरीं तां पुनः
तीर्णाब्धिः कपिभिर्युतो यमनमत् तं रामचन्द्रं भजे |

सुन्दरकाण्डम् ||

यस्य श्रीहनुमाननुग्रहबलात् तीर्णाम्बुधिर्लीलया
लङ्कां प्राप्य निशम्य रामदयितां भङ्क्त्वा वनं राक्षसान् |
अक्षादीन्विनिहत्य वीक्ष्य दशकं दग्ध्वा पुरीं तां पुनः
तीर्णाब्धिः कपिभिर्युतो यमनमत् तं रामचन्द्रं भजे |

With the blessings, (of Sri Hari), Sri Hanuman easily crossed the sea, reached Lanka, met Sita Devi. Destroyed the Ashokavana(garden),killed Akshakumar and other demons. He met Ravana and burnt down the city of lanka. Crossed the sea again, returned with the Group of monkeys which had stayed behind at the Mountain and paid his salutations / प्रणामा: unto the lotus-like feet.I worship Glory of Sri Ramachandra.

Sundara Kanda is the fifth chapter of Ramayanam. As the name itself suggests it is very beautiful containing 68 sargas / सर्गा:.

By :- Master Zinda Kaul

योर आमुत गिन्दुने / 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼

१. राज़ु पनने देश् द्रामुत, योर आमुत गिन्दुने।
नच्चुनस ज़न मोर आमुत, योर आमुत गिन्दुने॥
२. मंटि ह्योतमुत छुस सफर, त्राविथ गर्युक आरामु प्रंग।
तथ बरस दिथ तोर आमुत योर आमुत गिन्दुने॥
३. पानु दिथ मायायि बल, तत पानु द्रामुत ज़ेनुने।
आज़मावनि ज़ोर आमुत, योर आमुत गिन्दुने॥
४. रंगु रोस्त आसिथ खोतुस मा, रंग लागिथ नकशु पुछ्य।
छोत, क्रुहुन तय होर आमुत, योर आमुत गिन्दुने॥
५. ठानु रोस्तुय बानु पलज़्या, बानु रोस्तुय ठानु क्याह।
कुन बनिथ यिम जोरु आमुत, योर आमुत गिन्दुने॥
६. देशु रोस्त आसिथ सु पानय, बन्द देशुक छावुने।
ज़न जवाहिर योर आमुत, योर आमुत गिन्दुने॥
७. बोह मा छुस कुनि, ज़न छुस ज़ांनमुत ठहरुन मरुन।
वुछने सथ पोर द्रामुत, योर आमुत गिन्दने॥
८. मुशकि अंबर बांगरान, कुनि सुय च़न्दुन तु ही।
कुनि रवय अरुखोर आमुत, योर आमुत गिन्दुने॥
९. पालुवुन तय गालुवुन सुय, तारुवुन तय मारुवुन।
गाव, गंब,सुह ब्रोर आमुत, योर आमुत गिन्दुने॥
१०. ज़ीवु सैलावा व्यखुत, यथ ज़्योन, मरुन,आगुर तु अन्द।
ग्रज़वुन दाहगोर आमुत, योर आमुत गिन्दुने॥
११.कुनि सुय टैगोर आमुत, शंकराचार्य तु बुद।
कुनि असि ह्युव चोर आमुत, योर आमुत गिन्दने॥

𑇑. 𑆫𑆳𑆘𑇊𑆶 𑆥𑆤𑆤𑆼 𑆢𑆼𑆯𑆶 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇅
𑆤𑆖𑇀𑆖𑆶𑆤𑆱 𑆘𑇊𑆤 𑆩𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇒. 𑆩𑆂𑆛𑆴 𑆲𑇀𑆪𑆾𑆠𑆩𑆶𑆠 𑆗𑆶𑆱 𑆱𑆦𑆫, 𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮𑆴𑆡 𑆓𑆫𑇀𑆪𑆶𑆑 𑆄𑆫𑆳𑆩𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆂𑆓𑇅
𑆠𑆡 𑆧𑆫𑆱 𑆢𑆴𑆡 𑆠𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇓. 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆢𑆴𑆡 𑆩𑆳𑆪𑆳𑆪𑆴 𑆧𑆬, 𑆠𑆠 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆩𑆶𑆠 𑆘𑇊𑆼𑆤𑆶𑆤𑆼𑇅
𑆄𑆘𑇊𑆩𑆳𑆮𑆤𑆴 𑆘𑇊𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇔. 𑆫𑆂𑆓𑆶 𑆫𑆾𑆱𑇀𑆠 𑆄𑆱𑆴𑆡 𑆒𑆾𑆠𑆶𑆱 𑆩𑆳, 𑆫𑆂𑆓 𑆬𑆳𑆓𑆴𑆡 𑆤𑆑𑆯𑆶 𑆥𑆶𑆗𑇀𑆪𑇅
𑆗𑆾𑆠, 𑆑𑇀𑆫𑆶𑆲𑆶𑆤 𑆠𑆪 𑆲𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇕. 𑆜𑆳𑆤𑆶 𑆫𑆾𑆱𑇀𑆠𑆶𑆪 𑆧𑆳𑆤𑆶 𑆥𑆬𑆘𑇊𑇀𑆪𑆳, 𑆧𑆳𑆤𑆶 𑆫𑆾𑆱𑇀𑆠𑆶𑆪 𑆜𑆳𑆤𑆶 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆲𑇅
𑆑𑆶𑆤 𑆧𑆤𑆴𑆡 𑆪𑆴𑆩 𑆘𑆾𑆫𑆶 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇖. 𑆢𑆼𑆯𑆶 𑆫𑆾𑆱𑇀𑆠 𑆄𑆱𑆴𑆡 𑆱𑆶 𑆥𑆳𑆤𑆪, 𑆧𑆤𑇀𑆢 𑆢𑆼𑆯𑆶𑆑 𑆗𑆳𑆮𑆶𑆤𑆼𑇅
𑆘𑇊𑆤 𑆘𑆮𑆳𑆲𑆴𑆫 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇗. 𑆧𑆾𑆲 𑆩𑆳 𑆗𑆶𑆱 𑆑𑆶𑆤𑆴, 𑆘𑇊𑆤 𑆗𑆶𑆱 𑆘𑇊𑆳𑆂𑆤𑆩𑆶𑆠 𑆜𑆲𑆫𑆶𑆤 𑆩𑆫𑆶𑆤𑇅
𑆮𑆶𑆗𑆤𑆼 𑆱𑆡 𑆥𑆾𑆫 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇘. 𑆩𑆶𑆯𑆑𑆴 𑆃𑆂𑆧𑆫 𑆧𑆳𑆂𑆓𑆫𑆳𑆤, 𑆑𑆶𑆤𑆴 𑆱𑆶𑆪 𑆖𑇊𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤 𑆠𑆶 𑆲𑆵𑇅
𑆑𑆶𑆤𑆴 𑆫𑆮𑆪 𑆃𑆫𑆶𑆒𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇙. 𑆥𑆳𑆬𑆶𑆮𑆶𑆤 𑆠𑆪 𑆓𑆳𑆬𑆶𑆮𑆶𑆤 𑆱𑆶𑆪, 𑆠𑆳𑆫𑆶𑆮𑆶𑆤 𑆠𑆪 𑆩𑆳𑆫𑆶𑆮𑆶𑆤𑇅
𑆓𑆳𑆮, 𑆓𑆂𑆧,𑆱𑆶𑆲 𑆧𑇀𑆫𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇑𑇐. 𑆘𑇊𑆵𑆮𑆶 𑆱𑆽𑆬𑆳𑆮𑆳 𑆮𑇀𑆪𑆒𑆶𑆠, 𑆪𑆡 𑆘𑇊𑇀𑆪𑆾𑆤, 𑆩𑆫𑆶𑆤,𑆄𑆓𑆶𑆫 𑆠𑆶 𑆃𑆤𑇀𑆢𑇅
𑆓𑇀𑆫𑆘𑇊𑆮𑆶𑆤 𑆢𑆳𑆲𑆓𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆
𑇑𑇑.𑆑𑆶𑆤𑆴 𑆱𑆶𑆪 𑆛𑆽𑆓𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆯𑆂𑆑𑆫𑆳𑆖𑆳𑆫𑇀𑆪 𑆠𑆶 𑆧𑆶𑆢𑇅
𑆑𑆶𑆤𑆴 𑆃𑆱𑆴 𑆲𑇀𑆪𑆶𑆮 𑆖𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠, 𑆪𑆾𑆫 𑆄𑆩𑆶𑆠 𑆓𑆴𑆤𑇀𑆢𑆶𑆤𑆼𑇆

By :- Anonymous

सोंथ आव सोंथ आव / 𑆱𑆾𑆂𑆡 𑆄𑆮 𑆱𑆾𑆂𑆡 𑆄𑆮

सोंथ आव सोंथ आव, काव करान टाव टाव
हार वनान सोंथ आव, बिल्यबिचर्यो दिल शेहलाव
टेकु बटन्यन जोश आव, नंगु कुलयन पन द्राव
होख्युमुत्यन ज़ुव च़ाव ।
कुकिलु छि बोलान गूविंद गू, पोशनूल छि वनान ही शम्भू
कोसतूर छि वनान सोंथ हो आव सोंथ हो आव
सोंथ आव कुल्यन कंट्यन च़ाव ज़ुव
अड्यन द्रायि पन अड्यन द्रायि पोश, जायि जायि द्रायि फुलय
नागन व्यथन तु क्वलन आव पोन्य, गाडन आव माम

𑆱𑆾𑆂𑆡 𑆄𑆮 𑆱𑆾𑆂𑆡 𑆄𑆮, 𑆑𑆳𑆮 𑆑𑆫𑆳𑆤 𑆛𑆳𑆮 𑆛𑆳𑆮
𑆲𑆳𑆫 𑆮𑆤𑆳𑆤 𑆱𑆾𑆂𑆡 𑆄𑆮, 𑆧𑆴𑆬𑇀𑆪𑆧𑆴𑆖𑆫𑇀𑆪𑆾 𑆢𑆴𑆬 𑆯𑆼𑆲𑆬𑆳𑆮
𑆛𑆼𑆑𑆶 𑆧𑆛𑆤𑇀𑆪𑆤 𑆘𑆾𑆯 𑆄𑆮, 𑆤𑆂𑆓𑆶 𑆑𑆶𑆬𑆪𑆤 𑆥𑆤 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆮
𑆲𑆾𑆒𑇀𑆪𑆶𑆩𑆶𑆠𑇀𑆪𑆤 𑆘𑇊𑆶𑆮 𑆖𑇊𑆳𑆮𑇅
𑆑𑆶𑆑𑆴𑆬𑆶 𑆗𑆴 𑆧𑆾𑆬𑆳𑆤 𑆓𑆷𑆮𑆴𑆂𑆢 𑆓𑆷, 𑆥𑆾𑆯𑆤𑆷𑆬 𑆗𑆴 𑆮𑆤𑆳𑆤 𑆲𑆵 𑆯𑆩𑇀𑆨𑆷
𑆑𑆾𑆱𑆠𑆷𑆫 𑆗𑆴 𑆮𑆤𑆳𑆤 𑆱𑆾𑆂𑆡 𑆲𑆾 𑆄𑆮 𑆱𑆾𑆂𑆡 𑆲𑆾 𑆄𑆮
𑆱𑆾𑆂𑆡 𑆄𑆮 𑆑𑆶𑆬𑇀𑆪𑆤 𑆑𑆂𑆛𑇀𑆪𑆤 𑆖𑇊𑆳𑆮 𑆘𑇊𑆶𑆮
𑆃𑆝𑇀𑆪𑆤 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆪𑆴 𑆥𑆤 𑆃𑆝𑇀𑆪𑆤 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆪𑆴 𑆥𑆾𑆯, 𑆘𑆳𑆪𑆴 𑆘𑆳𑆪𑆴 𑆢𑇀𑆫𑆳𑆪𑆴 𑆦𑆶𑆬𑆪
𑆤𑆳𑆓𑆤 𑆮𑇀𑆪𑆡𑆤 𑆠𑆶 𑆑𑇀𑆮𑆬𑆤 𑆄𑆮 𑆥𑆾𑆤𑇀𑆪, 𑆓𑆳𑆝𑆤 𑆄𑆮 𑆩𑆳𑆩

मम्मी अचि़ चोकस
चायि बतु मोकस
रनि गैस दानस
शेरि बतु बानस
गॅड़ु दियि सारिनुय
पतु खेयि पानस

𑆩𑆩𑇀𑆩𑆵 𑆃𑆖𑆴 𑆖𑆾𑆑𑆱
𑆖𑆳𑆪𑆴 𑆧𑆠𑆶 𑆩𑆾𑆑𑆱
𑆫𑆤𑆴 𑆓𑆽𑆱 𑆢𑆳𑆤𑆱
𑆯𑆼𑆫𑆴 𑆧𑆠𑆶 𑆧𑆳𑆤𑆱
𑆓𑆝𑆶 𑆢𑆴𑆪𑆴 𑆱𑆳𑆫𑆴𑆤𑆶𑆪
𑆥𑆠𑆶 𑆒𑆼𑆪𑆴 𑆥𑆳𑆤𑆱

By :- Usha Munshi

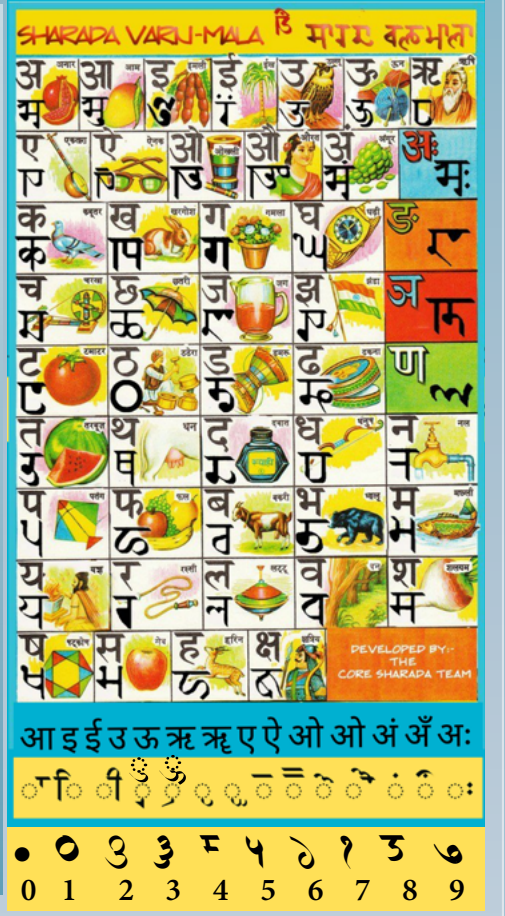

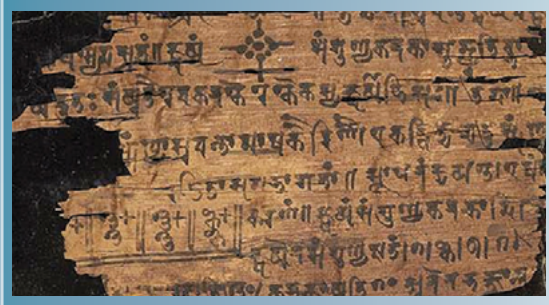

समय चलता है
हर पल बदलता है
पल मे रंग बिखेरता है
पल मे सब सिकुड़ता है
दुःख आता है चला जाता है
सुख आता है नहीं ठहरता है
हर चीज़ बहाव मे रहता है
सद्जन उसी बहाव मे ठहरता है
समय मे समय से परे रसमय रहता है
यही तो समय की परिभाषा है

𑆱𑆩𑆪 𑆖𑆬𑆠𑆳 𑆲𑆽
𑆲𑆫 𑆥𑆬 𑆧𑆢𑆬𑆠𑆳 𑆲𑆽
𑆥𑆬 𑆩𑆼 𑆫𑆁𑆓 𑆧𑆴𑆒𑆼𑆫𑆠𑆳 𑆲𑆽
𑆥𑆬 𑆩𑆼 𑆱𑆧 𑆱𑆴𑆑𑆶𑆝𑆠𑆳 𑆲𑆽
𑆢𑆶𑆂𑆒 𑆄𑆠𑆳 𑆲𑆽 𑆖𑆬𑆳 𑆘𑆳𑆠𑆳 𑆲𑆽
𑆱𑆶𑆒 𑆄𑆠𑆳 𑆲𑆽 𑆤𑆲𑆵𑆁 𑆜𑆲𑆫𑆠𑆳 𑆲𑆽
𑆲𑆫 𑆖𑆵𑆘 𑆧𑆲𑆳𑆮 𑆩𑆼 𑆫𑆲𑆠𑆳 𑆲𑆽
𑆱𑆢𑇀𑆘𑆤 𑆇𑆱𑆵 𑆧𑆲𑆳𑆮 𑆩𑆼 𑆜𑆲𑆫𑆠𑆳 𑆲𑆽
𑆱𑆩𑆪 𑆩𑆼 𑆱𑆩𑆪 𑆱𑆼 𑆥𑆫𑆼 𑆫𑆱𑆩𑆪 𑆫𑆲𑆠𑆳 𑆲𑆽
𑆪𑆲𑆵 𑆠𑆾 𑆱𑆩𑆪 𑆑𑆵 𑆥𑆫𑆴𑆨𑆳𑆰𑆳 𑆲𑆽

By :- Akshita Damnia

माँ सरस्वती वन्दना / 𑆩𑆳𑆀 𑆱𑆫𑆱𑇀𑆮𑆠𑆵 𑆮𑆤𑇀𑆢𑆤𑆳

हे वाग् देवी! माँ सरस्वती तव चरणों में शीश नमे।
हे वाणीदायी! वीणापाणि तव चरणों में शीश नमे॥१॥
दे वरदान माँ विद्यादायी भक्त करत तव जप नमे।
हे दयानी! माँ महाकाली तव नाम से तम डरे॥२॥
तू रणचण्डी का रूप धरी मम उर आनंदी करे।
हे वाग् देवी! माँ सरस्वती तव चरणों में शीश नमे॥३॥

𑆲𑆼 𑆮𑆳𑆓𑇀 𑆢𑆼𑆮𑆵! 𑆩𑆳𑆀 𑆱𑆫𑆱𑇀𑆮𑆠𑆵 𑆠𑆮 𑆖𑆫𑆟𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆯𑆵𑆯 𑆤𑆩𑆼𑇅
𑆲𑆼 𑆮𑆳𑆟𑆵𑆢𑆳𑆪𑆵! 𑆮𑆵𑆟𑆳𑆥𑆳𑆟𑆴 𑆠𑆮 𑆖𑆫𑆟𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆯𑆵𑆯 𑆤𑆩𑆼𑇆𑇑𑇆
𑆢𑆼 𑆮𑆫𑆢𑆳𑆤 𑆩𑆳𑆀 𑆮𑆴𑆢𑇀𑆪𑆳𑆢𑆳𑆪𑆵 𑆨𑆑𑇀𑆠 𑆑𑆫𑆠 𑆠𑆮 𑆘𑆥 𑆤𑆩𑆼𑇅
𑆲𑆼 𑆢𑆪𑆳𑆤𑆵! 𑆩𑆳𑆀 𑆩𑆲𑆳𑆑𑆳𑆬𑆵 𑆠𑆮 𑆤𑆳𑆩 𑆱𑆼 𑆠𑆩 𑆝𑆫𑆼𑇆𑇒𑇆
𑆠𑆷 𑆫𑆟𑆖𑆟𑇀𑆝𑆵 𑆑𑆳 𑆫𑆷𑆥 𑆣𑆫𑆵 𑆩𑆩 𑆇𑆫 𑆄𑆤𑆁𑆢𑆵 𑆑𑆫𑆼𑇅
𑆲𑆼 𑆮𑆳𑆓𑇀 𑆢𑆼𑆮𑆵! 𑆩𑆳𑆀 𑆱𑆫𑆱𑇀𑆮𑆠𑆵 𑆠𑆮 𑆖𑆫𑆟𑆾𑆁 𑆩𑆼𑆁 𑆯𑆵𑆯 𑆤𑆩𑆼𑇆𑇓𑇆

Brief overview of the History of Sharada Script

By Rakesh Kaul

Sharada Lipi traces back to 3rd CE, as per the new evidence that has surfaced up lately. New carbon dating research commissioned by the University of Oxford's Bodleian Libraries into the ancient Indian Bakhshali manuscript, provides evidence that this manuscript can be dated to 3rd CE. Determining the date of the Bakhshali manuscript is of vital importance to the history of mathematics and study of early South Asian culture testifying to the subcontinent's rich and longstanding scientific tradition.

The Bakhshali manuscript uses an early stage of the Sharada script, and therefore, provides earliest record of this script. Thus, Sharada has existed much before Devanagari, but Devanagari has never been replacement for Sharada. Sharada is mother script to Gurumukhi, Landa and Takri scripts. The use of this script was at its prime between 8th and 12th century CE in Kashmir and neighbouring areas. This also happens to be the era when Kashmir was rich culturally and spiritually and was the hub of knowledge. This is the time when Sharada Peeth in Kashmir was a well recognized as a seat of learning and was famous all over India and in the neighbouring countries. Large number of books and scriptures were written in Sharada Script during this time. No wonder, there are an estimated 40,000 manuscripts written in Sharada script, which can be found in various libraries in India, United States, Canada and many European countries. Many must have got destroyed and some may be lying with some householders. These manuscripts are believed to be rich source of knowledge about mathematics, astrology, medicine and philosophy.

With the invasion of Muslim rulers and their establishment in India and particularly in Kashmir, Hindu literature including Sharada script faced a serious on slaughter. The script was forced out of usage and became almost extinct. The general population remained deprived of the knowledge of the script as well as the grand manuscripts that were written in this script. Only a minuscule of Hindu community who continued to use Sharada for writing horoscopes remained knowledgeable about this script.

Dr Bhushan Kumar Kaul Deambi – India's Foremost Exponent on Sharada Script

By :-Dr Sushma Jatoo & Vineet Daembi

Born on Ashwin Krishna Paksh Dashmi of Saptrishi Samvat 5014 (21st September, 1938) in Kralyar, Rainawari, Srinagar (Kashmir), young Bhushan Kumar grew up in an atmosphere typical of Kashmiri Pandit families of that era, dedicated both to academics and religion. His father, Pt Kanth Kaul Deambi, a renowned teacher retired as Inspector of Schools, Kashmir; his mother, Smt Leelawati was a deeply religious soul. Bhushan a brilliant student from DAV School, Rainawari , completed his Matriculation at the young age of 14.

Bhushan went to DAV College Jalandhar for his M.A. in Sanskrit (1958). Upon his return to Kashmir, Gandhi Memorial College, a privately run College in Srinagar, offered him employment as a faculty in Department of Sanskrit and Hindi in 1959 besides allowing him to pursue his quest for academic excellence. He completed his M.A. in Ancient Indian History, Culture and Archaeology in 1962 from Punjab University. For his PhD, he worked under the renowned Prof. Jagan Nath Agrawal, the doyen of Indian epigraphy, at Vishaveshwaranand Vishav Bandhu Institute of Sanskrit and Indological Studies, Sadhu Ashram, Hoshiarpur, Punjab. His PhD thesis "A Historical and Cultural Study of Sharada Inscriptions" was approved by two international subject matter experts with the comments," This work is too original to be commented upon,"! As a result, Bhushan Kumar Kaul Deambi got his PhD degree in 1968 by Punjab University, Chandigarh, without any viva-voce, as an exception.

Dr Deambi wrote extensively on his area of expertise in Indology and Epigraphy. A selection of his research specializations and publications, including those under his supervision (marked in Asterisk*) are as follows:

1. Corpus of the Sharada Inscriptions of Kashmir
2. History and Culture of Ancient Gandhara and Western Himalayas
3. Sharada and Takari Alphabets
4. Studies in Indian Epigraphy
5. Catalogue (Vol. I) of the Sanskrit Manuscripts Preserved in the Manuscripts Library of the Directorate of Libraries, Museums and Archaeology, Jammu & Kashmir, Srinagar.
6. Important Sharada Inscriptions of Kashmir- a Socio-political Study
7. Sharada Script and Inscriptions of North-western India and Pakistan
8. Ancient Indian and Central Asian Epigraphy (Brahmi and Kharosthi Documents in Sanskrit and Prakrit
9. Ancient Indian Culture in Central Asia
10. Ancient History of Kashmir, India and Central Asia
11. History of Buddhism in Kashmir and Central Asia
12. Khonmouh Inscriptions of the Reign of Zain-ul-Abdin
13. Social and Economic Conditions of Ancient Chamba
14. Four Unedited Inscriptions of Kashmir
15. Fountain Stone Inscriptions of Chamba
16. Important Place Names in Sharada Inscriptions
17. Ancient Trigarta and Baijnath Prashastis
18. Buddhist Education in Kashmir
19. Srinagar Bramha Image Inscription of the Reign of Sultan Sikandar Shaha
20. Drass (Kargil) Pillar Inscriptions
21. Kharosthi Documents of Kashmir and Central Asia
22. Kushana Conquest of Kipin (Kashmir) and Ladakh
23. Kashmiri Surnames and Nicknames
24. Does Purandishthana of Rajtarangini represent Modern Pandrethan?
25. Administrative Titles in Sharada Inscriptions
26. Sharada Inscriptions as a Source of Studying Himalayan Culture and Problems Involved Therein
27. Indian Travelers in Central Asia, Tibet, China and Japan (650-1250 AD)
28. Recently Discovered Buddhist Sanskrit Inscriptions from Antabhavan, Srinagar
29. The Sharada Alphabet – A Link between Kashmir and Central Asia
30. The Sharada Script – Origin and Development

31. Emerging Scenario in Central Asia – Continuity and Change
32. Kashmir's Contribution to Buddhism in Central Asia*
33. Critical Study of Bakhshali (North West Frontier Province – NWFP, now in Pakistan) Manuscript*
34. Comparative Study of Central Asian Udanvarga and Pali Dhammapada
35. Palaeographic Study of the Bower Manuscripts in Sanskrit, Discovered from Kucha (Central Asia) *
36. Ancient India and Khotan (Central Asia) – Historical, Cultural and Commercial Contacts*
37. Concept of Supreme Self in Advaita Vedanta in Kashmir Shaivism*
38. Buddhist Savants of Kashmir, Their Contribution to Buddhist Literature and Spread of Buddhism in Central Asia, China and Tibet*
39. History of Hindu Shahis of Kabul and Gilgit with Special Reference to Their Inscriptions and Coins*
40. Eleventh Century Kashmir Society as Depicted in the Works of Kshemendra*
41. Kashmir's contribution to Sanskrit Literature*
42. Ancient Indian Culture in Central Asia*

Even after establishing his name in the rarefied circles of ancient Indian history, Indology and epigraphy, Dr Deambi continued to teach at the Gandhi Memorial College, Srinagar – being loyal to the Institution that had allowed him the freedom to pursue his academic interests – something of a rarity in the current atmosphere of success at all costs! He got involved in extra-curricular activities of his college; he is an ace swimmer and ardent hiker himself. As Dean of Student Welfare, he would personally lead College hiking expeditions to various exotic locations of the Kashmir Valley including Tarsar-Marsar, Kounsernaag, Gangabal, Kolahai Glacier etc.

Dr Deambi joined the Centre for Central Asian Studies, Kashmir University, as an Associate Professor in 1980 and later headed the Institution as its Director until he was forced to leave Kashmir Valley in 1990 due to political disturbances. He also served as Adjunct Faculty to History and Sanskrit departments in Kashmir University until that time. For some time, he functioned as visiting faculty in the Department of History, Kumaon University, Nainital, Uttarakhand.

During his academically active years, Dr Deambi associated himself with various academic bodies, including the Epigraphical Society of India, Place Names Society of India and various Indology related bodies. His research papers are internationally acknowledged for their academic excellence. Dr Deambi married Mohini Munshi of Srinagar in 1963 and lived with his family (wife, three children, parents and sister) in Rainawari at Srinagar until his uprooting from Kashmir in 1990. Since then, Dr Deambi has been living with his son at Haldwani, (Uttarakhand).

साष्टांग व पंचांग प्रणाम / 𑆱𑆳𑆰𑇀𑆛𑆳𑆁𑆓 𑆮 𑆥𑆁𑆖𑆳𑆁𑆓 𑆥𑇀𑆫𑆟𑆳𑆩

इस शिल्प से घ्यात होता है कि पुरुषों को आष्टांग (साष्टांग) प्रणाम करना चाहिये ओर स्त्रियों को पंचांग प्रणाम करना चाहिये। आष्टांग प्रणाम मैं- हाथ (2), छाती (1), सिर (1), गुठने (2), पाऊं (2) पृथ्वी को स्पर्श करते हैं। पंचांग प्रणाम मैं - हाथ (2), सिर (1), पाऊं (2) पृथ्वी को स्पर्श करते हैं।

उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा।

पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टाङ्ग उच्यते॥

हृदय,मस्तक,नेत्र,मन,वाणी,चरण,हस्त और घुटने से शरणागत होने को अष्टांग प्रणाम कहते हैं।

Meaning : Touching the ground (prostration) with our chest (Heart), head-feet, hands and knees in addition to our mind and eyes is called Sashtaanga pranaam.

𑆈𑆫𑆱𑆳 𑆯𑆴𑆫𑆱𑆳 𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑇀𑆪𑆳 𑆩𑆤𑆱𑆳 𑆮𑆖𑆱𑆳 𑆠𑆡𑆳𑇅

𑆥𑆢𑇀𑆨𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆑𑆫𑆳𑆨𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆘𑆳𑆤𑆶𑆨𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆟𑆳𑆩𑆾𑇁𑆰𑇀𑆛𑆳𑆔𑇀𑆓 𑆈𑆖𑇀𑆪𑆠𑆼𑇆

By :-Shiben Kishen Sadhu - "Saadh"

नेथ प्रबातस गनपतयारय / 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪

नेथ प्रबातस गनपतयारय - करहांय दरशुन साकारय।
बोज़ान पानु तति ज़ारुपारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
1. त्रन बवनन हुन्द छुख आदिदीव - पूज़ान च्रेय सारी दीव तु ज़ीव।
श्रान करिथुय द्यान चोन दारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
बोज़ान पानु तति ज़ारुपारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
2. शूबिदार क्याह छु चोनुय यि दरबार - दूर अति गछान बखतेन अन्दकार।
नांल्य त्रावहंय लोलु पोशि मालय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
बोज़ान पानु तति ज़ारुपारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
3. मूशक ब्रोन्ठकनि छय शूबान - हुकुमस चानिस सुय प्रारान।
वुछिहंथ च्रुय मूशक सवारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
बोज़ान पानु तति ज़ारुपारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
4. बागिवानुय वाति चोन दरबार - अति लगान सारिनुय बवसरु तार।
डेडि चानि तल आंरच़र बु प्रारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
बोज़ान पानु तति ज़ारुपारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
5. सेद विनायक च्रु सिदि-दाता - दॅखु हरता च्रुय सॅखु करता।
दरबारु चानि पापन गछान क्षय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
बोज़ान पानु तति ज़ारुपारय -नेथ प्रबातस गनपतयारय।
6. आदिदीव छुख गॅडन्युक च्रेय आदकार -कारन सारिनुय छुख दिवान तार।
पूज़ान गॅडनेथ छिय च्रेय तवय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
बोज़ान पानु तति ज़ारपारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
7. गदि बिहिथ शूबान ताजुदार - बखशान बॅखतेन सथ-च्रेथ वेच़ार।
वातिहे साद ओर बेयि दुबारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
बोज़ान पानु तति ज़ारुपारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
नेथ प्रबातस गनपतयारय - करहां दरशुन साकारय।
बोज़ान पानु तति ज़ारुपारय - नेथ प्रबातस गनपतयारय।
॥जय श्री गणेशा॥

𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪 - 𑆑𑆫𑆲𑆳𑆁𑆪 𑆢𑆫𑆯𑆶𑆤 𑆱𑆳𑆑𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆧𑆾𑆘𑆳𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆠𑆠𑆴 𑆘𑆳𑆫𑆶𑆥𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑇑. 𑆠𑇀𑆫𑆤 𑆧𑆮𑆤𑆤 𑆲𑆶𑆤𑇀𑆢 𑆗𑆶𑆒 𑆄𑆢𑆴𑆢𑆵𑆮 - 𑆥𑆷𑆘𑆳𑆤 𑆖𑇀𑆫𑆼𑆪 𑆱𑆳𑆫𑆵 𑆢𑆵𑆮 𑆠𑆶 𑆘𑆵𑆮𑇅
𑆯𑇀𑆫𑆳𑆤 𑆑𑆫𑆴𑆡𑆶𑆪 𑆢𑇀𑆪𑆳𑆤 𑆖𑆾𑆤 𑆢𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆧𑆾𑆘𑆳𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆠𑆠𑆴 𑆘𑆳𑆫𑆶𑆥𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑇒. 𑆯𑆷𑆧𑆴𑆢𑆳𑆫 𑆑𑇀𑆪𑆳𑆲 𑆗𑆶 𑆖𑆾𑆤𑆶𑆪 𑆪𑆴 𑆢𑆫𑆧𑆳𑆫 - 𑆢𑆷𑆫 𑆃𑆠𑆴 𑆓𑆗𑆳𑆤 𑆧𑆒𑆠𑆼𑆤 𑆃𑆤𑇀𑆢𑆑𑆳𑆫𑇅
𑆤𑆳𑆁𑆬𑇀𑆪 𑆠𑇀𑆫𑆳𑆮𑆲𑆁𑆪 𑆬𑆾𑆬𑆶 𑆥𑆾𑆯𑆴 𑆩𑆳𑆬𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆧𑆾𑆘𑆳𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆠𑆠𑆴 𑆘𑆳𑆫𑆶𑆥𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑇓. 𑆩𑆷𑆯𑆑 𑆧𑇀𑆫𑆾𑆤𑇀𑆜𑆑𑆤𑆴 𑆗𑆪 𑆯𑆷𑆧𑆳𑆤 - 𑆲𑆶𑆑𑆶𑆩𑆱 𑆖𑆳𑆤𑆴𑆱 𑆱𑆶𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑆳𑆤𑇅
𑆮𑆶𑆗𑆴𑆲𑆁𑆡 𑆖𑇀𑆫𑆶𑆪 𑆩𑆷𑆯𑆑 𑆱𑆮𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆧𑆾𑆘𑆳𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆠𑆠𑆴 𑆘𑆳𑆫𑆶𑆥𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑇔. 𑆧𑆳𑆓𑆴𑆮𑆳𑆤𑆶𑆪 𑆮𑆳𑆠𑆴 𑆖𑆾𑆤 𑆢𑆫𑆧𑆳𑆫 - 𑆃𑆠𑆴 𑆬𑆓𑆳𑆤 𑆱𑆳𑆫𑆴𑆤𑆶𑆪 𑆧𑆮𑆱𑆫𑆶 𑆠𑆳𑆫𑇅
𑆝𑆼𑆝𑆴 𑆖𑆳𑆤𑆴 𑆠𑆬 𑆄𑆁𑆫𑆖𑆫 𑆧𑆶 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆧𑆾𑆘𑆳𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆠𑆠𑆴 𑆘𑆳𑆫𑆶𑆥𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑇕. 𑆱𑆼𑆢 𑆮𑆴𑆤𑆳𑆪𑆑 𑆖𑇀𑆫𑆶 𑆱𑆴𑆢𑆴-𑆢𑆳𑆠𑆳 - 𑆢𑆒𑆶 𑆲𑆫𑆠𑆳 𑆖𑇀𑆫𑆶𑆪 𑆱𑆒𑆶 𑆑𑆫𑆠𑆳𑇅
𑆢𑆫𑆧𑆳𑆫𑆶 𑆖𑆳𑆤𑆴 𑆥𑆳𑆥𑆤 𑆓𑆗𑆳𑆤 𑆑𑇀𑆰𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆧𑆾𑆘𑆳𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆠𑆠𑆴 𑆘𑆳𑆫𑆶𑆥𑆳𑆫𑆪 -𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑇖. 𑆄𑆢𑆴𑆢𑆵𑆮 𑆗𑆶𑆒 𑆓𑆝𑆤𑇀𑆪𑆶𑆑 𑆖𑇀𑆫𑆼𑆪 𑆄𑆢𑆑𑆳𑆫 -𑆑𑆳𑆫𑆤 𑆱𑆳𑆫𑆴𑆤𑆶𑆪 𑆗𑆶𑆒 𑆢𑆴𑆮𑆳𑆤 𑆠𑆳𑆫𑇅
𑆥𑆷𑆘𑆳𑆤 𑆓𑆝𑆤𑆼𑆡 𑆗𑆴𑆪 𑆖𑇀𑆫𑆼𑆪 𑆠𑆮𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆧𑆾𑆘𑆳𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆠𑆠𑆴 𑆘𑆳𑆫𑆥𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑇗. 𑆓𑆢𑆴 𑆧𑆴𑆲𑆴𑆡 𑆯𑆷𑆧𑆳𑆤 𑆠𑆳𑆘𑆶𑆢𑆳𑆫 - 𑆓𑆒𑆯𑆳𑆤 𑆧𑆒𑆠𑆼𑆤 𑆱𑆡-𑆖𑇀𑆫𑆼𑆡 𑆮𑆼𑆖𑆳𑆫𑇅
𑆮𑆳𑆠𑆴𑆲𑆼 𑆱𑆳𑆢 𑆏𑆫 𑆧𑆼𑆪𑆴 𑆢𑆶𑆧𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆧𑆾𑆘𑆳𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆠𑆠𑆴 𑆘𑆳𑆫𑆶𑆥𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪 - 𑆑𑆫𑆲𑆳𑆁 𑆢𑆫𑆯𑆶𑆤 𑆱𑆳𑆑𑆳𑆫𑆪𑇅
𑆧𑆾𑆘𑆳𑆤 𑆥𑆳𑆤𑆶 𑆠𑆠𑆴 𑆘𑆳𑆫𑆶𑆥𑆳𑆫𑆪 - 𑆤𑆼𑆡 𑆥𑇀𑆫𑆧𑆳𑆠𑆱 𑆓𑆤𑆥𑆠𑆪𑆳𑆫𑆪𑇅
𑇆𑆘𑆪 𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆓𑆟𑆼𑆯𑆳𑇆

By :-Radha Raghunathan

Ksemarāja's Pratyabhijñāhṛdayam

Introduction – (Part 1)

With the blessings of the Divine Lord and the holy preceptors, let us explore Kṣemarāja's Pratyabhijñāhṛdayam (hereafter Pr.hṛ.). Before we begin the study of the text and the commentary by the author himself, we shall see a general introduction on the philosophy it expounds, namely, Kashmir Śaivism, the author Kṣemarāja, and a brief idea about Pr.hṛ.

Kashmir Śaivism

The tradition of Kashmir Śaivism is textually traced to originate from a series of seventy-seven aphorisms (sūtra-s) inscribed in Sanskrit on a rock in the Mahādeva mountain along the Haravan stream. This rock was supposedly behind the present-day Shalimar Gardens near Srinagar. Since these sutra-s are believed to be inscribed by Lord Śiva himself, they are termed Śiva-sūtra-s. Thus, the Śiva-sūtra-s constitute the foundational text of Kashmir Śaivism. Traditional belief is that Lord Śiva first revealed the text to sage Vasugupta (around the ninth century) in a dream. Vasugupta taught the text to his two disciples Kallaṭa and Somānanda.

Being of the nature of divine revelation, the Śiva-sūtra-s are philosophical in their contents. Historically, these sūtra-s and the Kashmir Śaivism which originated on the basis of those sūtra-s are considered to belong to Tāntric or Āgamic tradition. It implies that, and in practice, the Śiva-sūtra-s and Kashmir Śaivism are independent of the rules of the Vedas.

Vasugupta's contemporaries and successors wrote a number of Sanskrit commentaries on his version of the Śiva-sūtra-s in Sanskrit. Famous among them are Vimarśinī by Kṣemarāja (10th century) and a vārttikā by Bhāskara (11th century). These have been translated into several other Indian languages and foreign languages. Notable among the English translations are by Jaideva Singh and Swami Lakshman Joo.

Based on the Śiva-sūtra-s, Vasugupta's disciple Kallaṭa is said to have authored the Spanda-kārikā-s, while the other disciple Somānanda is known to have authored the Śiva-dṛṣṭi. Somānanda is also credited with founding the philosophy of Recognition (Pratyabhijñā), the well-known branch of Kashmir Śaivism. Somānanda's disciple Utpaladeva, revered as Utpalācārya, presented the philosophy in a systematic manner in his Īśvara-pratyabhijñā-kārikā-s (IPK). Later Abhinavagupta wrote two commentaries on the IPK. His disciple Kṣemarāja simplified the contents of Utpalācārya's IPK and Abhinavagupta's commentaries for the benefit of those who were desirous of understanding Kashmir Śaivism but lacked the mastery to grasp its intricacies. Thus was composed the Pratyabhijñāhṛdayam by Kṣemarāja.

(Introduction to be Contd.)

By :- Bala

अस्माकं मतलक्ष्यम्

अस्माकं देशे बहवः सिद्धान्ताः सन्ति। शैवसिद्धान्तः, वैष्णवानां पाञ्चरात्रम् , माध्वसिद्धान्तः .. अनेन परस्परवैरुध्येन विद्यमानाः सिद्धान्ताः मतान्यपि बहूनि सन्ति। परन्तु सर्वाण्यपि हिन्दूमते एव अन्तर्हितानि भवन्ति। एषु श्रेष्ठत्वं उत वा अल्पत्वं अस्ति वा इति अप्रस्तुतविषयः। सर्वेष्वपि सिद्धान्तेषु एकैव आधारभूतो विषयोऽस्ति। कोऽयमिति जिज्ञासा आवशयकी भवति। कमपि पृच्छामश्चेत् सम्यक् समाधानं न आयाति। तेषां पाण्डित्यं अस्ति चेदपि सिद्धान्तेषु स्थितान् भेदानेव आधिक्येन प्रदर्शयन्ति। एतान् सिद्धान्तान् एकत्रीकर्तुं एकं लक्ष्यमेकं सिद्ध्यते चेदेव हैन्दवमेकमतमिति वक्तुं न पारयामः। तर्हि तल्लक्ष्यं किं भवति ?

अनुदिनमपि केचित् रामायणपारायणं कुर्वन्ति। पारायणप्रारम्भावसानेषु इमं श्लोकं पठन्ति-

*स्वस्तिः प्रजाभ्यः परिपालयन्तां

न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।

गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं

लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥*

जनाः सौख्येन वसन्तु। राजानः धरणीं न्यायमार्गेण परिपालनं कुर्वन्तु गोब्राह्मणेभ्यः नित्यं मङ्गलं भवतु। लोकाः समस्ताः सुखिनःभवन्तु इति अर्थो भवति।

अस्मिन् श्लोके जनान् राज्ञः प्रति पृथगुक्त्वा गोब्राह्मणान् प्रति प्रत्येकतया अवोचत्। ब्राह्मणप्रशंसनं किमर्थं प्रत्येकं अकरोत् ? तेऽपि लोके एव सन्ति खलु। तर्हि तेषां वैशिष्ट्यं किमस्ति ? ब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु इति प्रत्येकवचनं पक्षपातं न सूचयति ? अस्य वचनस्य आशयः कः ?

पूर्वं एकदा कूनपाण्ड्यन् इति राजा मधुरानगरं परिपालयति स्म। सः श्रमणमतं स्वीकृतवान्। तं मतं स्वीकृत्य सः "यः कोऽपि भस्मधारणं रुद्राक्षधारणं च मा कुर्यात्" इति शासनञ्चकार। राज्ञः भार्या, मन्त्री च परमशिवैकान्त भक्तौ। तथापि राजाज्ञां कथं अतिक्रामतः ? राज्ञः बुद्धिः परावर्त्य पुनः शैवमार्गे कदा आयातीति शिवाराधनं कदा करिष्यतीति बाधातप्तहृदयेन प्रतीक्षां कुरुतःस्म। तस्मिन्काले एव तं राज्यं प्रति ज्ञानसम्बन्धिनः आगतवन्तः। ते चतुर्षु शैवाचार्येषु एकः। सुब्रह्मण्यस्वामिनः अपरावतारः। स्वभक्तैः साकं क्षेत्रदर्शनं कुर्वन्तः सन्तः मधुरानगरं आगतवन्तः। तथाविधं शुभसमयं प्रतीक्षमाणौ राजपत्नी राजमन्त्री च ज्ञानसम्बन्धिनं प्रति वार्तां प्रेषयित्वा "येन केनापि प्रकारेण राज्ञः बुद्धिं परिवर्तयतु" इति प्रार्थितवन्तौ।

सम्बन्धिनः मधुरायां एकस्मिन् प्रान्ते विश्रान्त्यर्थं आवासः अकुर्वन्। तेषां आमागनं न इच्छन् श्रमणाः तस्य आचार्यस्य आवासं अग्निना दाहयितुं अग्निं प्रज्वलितवन्तः। तं वीक्ष्य सम्बन्धिनः " अयमग्निः इतः राज्ञः देहे प्रविशतु" इति ईश्वरं संप्रार्थितवन्तः। ईश्वरसंकल्पात् राजा

अत्युग्रेण ज्वरेण पीडितः। श्रमणानां प्रयासेनापि स ज्वरः न अपगतः। तदा मन्त्री ज्ञानसम्बन्धिनः वैशिष्ट्यं वर्णयित्वा तान् आह्वयामश्चेत् ज्वरः अपगमिष्यतीति सम्यगुक्तवान् । लोके विवादकर्ता अन्यसमयेषु विवादं करोति चेदपि व्याधिपीडितसमये बाधां सोढुं अशक्यत्वात् किंचित् स्वाभिप्रायं परिवर्तयति । तथैव व्याधितीव्रेण पीडितः कूनपाण्ड्यन्नपि रुद्राक्षधारिणं भस्मलेपिनं न पश्यामीति प्रतिज्ञायाः ईषत् स्खलितः। मन्त्रिवचनं अङ्गीकृतवान् । मन्त्री आनन्दपरवशो भूत्वा सम्बन्धिनं निमन्त्रयामास ।

राज्ञः निकटे श्रमणानां ज्ञानसम्बन्धिनां मध्ये वाग्विवादः प्रारम्भः कृतः। सम्बन्धिनः श्रमणानुद्दिश्य “ भवन्तः राज्ञः दक्षिणपार्श्वस्थं ज्वरं अपनयन्तु । अहं वामपार्श्वस्थं ज्वरं अपनेष्यामि । भवन्तः मन्त्रशक्तिं प्रदर्शयन्तु । यदि भवन्तः नापनेष्यन्ति चेत् भवन्तः पराजिता भवितारः। मया अपनेतुं न शक्यते चेत् अहं पराजितः भवितास्मि” इति उक्त्वा राज्ञः वामभागे विभूतिं अलेपयन् । तद्भागे ज्वरः निश्चलः जातः। किन्तु श्रमणानां परिश्रमा न सफला जाता । तदा श्रमणाः “ भवान् दक्षिणभागस्य चिकित्सां कुर्वन्तु । वयं वामभागं ग्रहिष्यामः” इति अवोचन् । तथास्तु इति सम्बन्धिनः अकथयन् । पुनः वामभागः ज्वरेण आक्रमितः। दक्षिणभागे ज्वरः अपनीतः।

राज्ञः ज्वरः असामान्यः ननु । ईश्वरसंकल्पादुद्भूतः। अतः श्रमणानां गृहीतो भागः पुनः ज्वरग्रस्थो जातः। श्रमणानां अशक्तत्वं प्रमाणीकृतम् । ततः सम्बन्धिनः राजानं प्रति औदार्येण संपूर्णं ज्वरं अपनीतवन्तः।

तथापि श्रमणाः तेषां पराजयं नाङ्गीकुर्वन्ति । राजापि संपूर्णं विश्वासं न आप्तवान् । वादः पुनः प्रारब्धः। सम्बन्धिनः संवादात् प्राक् शिवमन्दिरं गत्वा “ स्वामिन्! वेदयागनिन्दापरायणान् श्रमणान् विजित्य त्वत् प्रतिष्ठा विश्वव्यापी भवत्विति अनुगृह्णातु” इति प्रार्थितवन्तः।

वादः मुहुर्प्रारब्धः। सम्बन्धिनः अवोचन्-” भवत्सिद्धान्ताः तालपत्रे विलिख्य वैघानद्यां प्रक्षिपन्तु । अहमपि मत्सिद्धान्तं लिखित्वा प्रक्षेपयामि । यत् तालपत्रं प्रवाहात् अभिमुखीकृत्य चलितुं शक्नोति तदेव सत्यसिद्धान्तः “ इति । तत्रापि सम्बन्धिन एव विजेतारः। तथापि श्रमणाः नाङ्गीकृतवन्तः। तथैव तेषां सिद्धान्तान् तालपत्रे लिखित्वा अग्नौ प्राक्षिपन् । तेषां तालपत्रं अग्निदाहको जातः।

सम्बन्धिनः अनेन लिखितवन्तः--

“ब्राह्मणाः सौख्येन वर्धन्ताम् । मानवाः पशवश्च सुखं जीवन्तु ।” अतः अस्माकं देशे मतबाहुल्यं वर्तते चेदपि मतलक्ष्यं इदमेव।

“गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यम् । लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु”।

अपारकरुणासिन्धुं ज्ञानदं शान्तरूपिणम्।

*श्री चन्द्रशेखरगुरुं प्रणमामि मुदावहम् ॥

कञ्चिपरमाचार्यवैभवात् अनूद्य...

𑆃𑆠𑇀𑆪𑆶𑆓𑇀𑆫𑆼𑆟 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆼𑆟 𑆥𑆵𑆝𑆴𑆠𑆂𑇅 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆪𑆳𑆱𑆼𑆤𑆳𑆥𑆴 𑆱 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆂 𑆤 𑆃𑆥𑆓𑆠𑆂𑇅 𑆠𑆢𑆳 𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆵 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤𑆂 𑆮𑆽𑆯𑆴𑆰𑇀𑆛𑇀𑆪𑆁 𑆮𑆫𑇀𑆟𑆪𑆴𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆠𑆳𑆤𑇀 𑆄𑆲𑇀𑆮𑆪𑆳𑆩𑆯𑇀𑆖𑆼𑆠𑇀 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆂 𑆃𑆥𑆓𑆩𑆴𑆰𑇀𑆪𑆠𑆵𑆠𑆴 𑆱𑆩𑇀𑆪𑆓𑆶𑆑𑇀𑆠𑆮𑆳𑆤𑇀 𑇅 𑆬𑆾𑆑𑆼 𑆮𑆴𑆮𑆳𑆢𑆑𑆫𑇀𑆠𑆳 𑆃𑆤𑇀𑆪𑆱𑆩𑆪𑆼𑆰𑆶 𑆮𑆴𑆮𑆳𑆢𑆁 𑆑𑆫𑆾𑆠𑆴 𑆖𑆼𑆢𑆥𑆴 𑆮𑇀𑆪𑆳𑆣𑆴𑆥𑆵𑆝𑆴𑆠𑆱𑆩𑆪𑆼 𑆧𑆳𑆣𑆳𑆁 𑆱𑆾𑆞𑆶𑆁 𑆃𑆯𑆑𑇀𑆪𑆠𑇀𑆮𑆳𑆠𑇀 𑆑𑆴𑆁𑆖𑆴𑆠𑇀 𑆱𑇀𑆮𑆳𑆨𑆴𑆥𑇀𑆫𑆳𑆪𑆁 𑆥𑆫𑆴𑆮𑆫𑇀𑆠𑆪𑆠𑆴 𑇅 𑆠𑆡𑆽𑆮 𑆮𑇀𑆪𑆳𑆣𑆴𑆠𑆵𑆮𑇀𑆫𑆼𑆟 𑆥𑆵𑆝𑆴𑆠𑆂 𑆑𑆷𑆤𑆥𑆳𑆟𑇀𑆝𑇀𑆪𑆤𑇀𑆤𑆥𑆴 𑆫𑆶𑆢𑇀𑆫𑆳𑆑𑇀𑆰𑆣𑆳𑆫𑆴𑆟𑆁 𑆨𑆱𑇀𑆩𑆬𑆼𑆥𑆴𑆤𑆁 𑆤 𑆥𑆯𑇀𑆪𑆳𑆩𑆵𑆠𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴𑆘𑇀𑆚𑆳𑆪𑆳𑆂 𑆆𑆰𑆠𑇀 𑆱𑇀𑆒𑆬𑆴𑆠𑆂𑇅 𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆴𑆮𑆖𑆤𑆁 𑆃𑆕𑇀𑆓𑆵𑆑𑆸𑆠𑆮𑆳𑆤𑇀 𑇅 𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆵 𑆄𑆤𑆤𑇀𑆢𑆥𑆫𑆮𑆯𑆾 𑆨𑆷𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤𑆁 𑆤𑆴𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆪𑆳𑆩𑆳𑆱 𑇅

𑆫𑆳𑆘𑇀𑆚𑆂 𑆤𑆴𑆑𑆛𑆼 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤𑆳𑆁 𑆩𑆣𑇀𑆪𑆼 𑆮𑆳𑆓𑇀𑆮𑆴𑆮𑆳𑆢𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑆩𑇀𑆨𑆂 𑆑𑆸𑆠𑆂𑇅 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤𑆂 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆤𑆶𑆢𑇀𑆢𑆴𑆯𑇀𑆪 “ 𑆨𑆮𑆤𑇀𑆠𑆂 𑆫𑆳𑆘𑇀𑆚𑆂 𑆢𑆑𑇀𑆰𑆴𑆟𑆥𑆳𑆫𑇀𑆯𑇀𑆮𑆱𑇀𑆡𑆁 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆁 𑆃𑆥𑆤𑆪𑆤𑇀𑆠𑆶 𑇅 𑆃𑆲𑆁 𑆮𑆳𑆩𑆥𑆳𑆫𑇀𑆯𑇀𑆮𑆱𑇀𑆡𑆁 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆁 𑆃𑆥𑆤𑆼𑆰𑇀𑆪𑆳𑆩𑆴 𑇅 𑆨𑆮𑆤𑇀𑆠𑆂 𑆩𑆤𑇀𑆠𑇀𑆫𑆯𑆑𑇀𑆠𑆴𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆢𑆫𑇀𑆯𑆪𑆤𑇀𑆠𑆶 𑇅 𑆪𑆢𑆴 𑆨𑆮𑆤𑇀𑆠𑆂 𑆤𑆳𑆥𑆤𑆼𑆰𑇀𑆪𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆖𑆼𑆠𑇀 𑆨𑆮𑆤𑇀𑆠𑆂 𑆥𑆫𑆳𑆘𑆴𑆠𑆳 𑆨𑆮𑆴𑆠𑆳𑆫𑆂𑇅 𑆩𑆪𑆳 𑆃𑆥𑆤𑆼𑆠𑆶𑆁 𑆤 𑆯𑆑𑇀𑆪𑆠𑆼 𑆖𑆼𑆠𑇀 𑆃𑆲𑆁 𑆥𑆫𑆳𑆘𑆴𑆠𑆂 𑆨𑆮𑆴𑆠𑆳𑆱𑇀𑆩𑆴” 𑆅𑆠𑆴 𑆇𑆑𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆫𑆳𑆘𑇀𑆚𑆂 𑆮𑆳𑆩𑆨𑆳𑆓𑆼 𑆮𑆴𑆨𑆷𑆠𑆴𑆁 𑆃𑆬𑆼𑆥𑆪𑆤𑇀 𑇅 𑆠𑆢𑇀𑆨𑆳𑆓𑆼 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆂 𑆤𑆴𑆯𑇀𑆖𑆬𑆂 𑆘𑆳𑆠𑆂𑇅 𑆑𑆴𑆤𑇀𑆠𑆶 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆥𑆫𑆴𑆯𑇀𑆫𑆩𑆳 𑆤 𑆱𑆦𑆬𑆳 𑆘𑆳𑆠𑆳 𑇅 𑆠𑆢𑆳 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆂 “ 𑆨𑆮𑆳𑆤𑇀 𑆢𑆑𑇀𑆰𑆴𑆟𑆨𑆳𑆓𑆱𑇀𑆪 𑆖𑆴𑆑𑆴𑆠𑇀𑆱𑆳𑆁 𑆑𑆶𑆫𑇀𑆮𑆤𑇀𑆠𑆶𑇅 𑆮𑆪𑆁 𑆮𑆳𑆩𑆨𑆳𑆓𑆁 𑆓𑇀𑆫𑆲𑆴𑆰𑇀𑆪𑆳𑆩𑆂” 𑆅𑆠𑆴 𑆃𑆮𑆾𑆖𑆤𑇀 𑇅 𑆠𑆡𑆳𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆅𑆠𑆴 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤𑆂 𑆃𑆑𑆡𑆪𑆤𑇀 𑇅 𑆥𑆶𑆤𑆂 𑆮𑆳𑆩𑆨𑆳𑆓𑆂 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆼𑆟 𑆄𑆑𑇀𑆫𑆩𑆴𑆠𑆂𑇅 𑆢𑆑𑇀𑆰𑆴𑆟𑆨𑆳𑆓𑆼 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆂 𑆃𑆥𑆤𑆵𑆠𑆂𑇅

𑆫𑆳𑆘𑇀𑆚𑆂 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆂 𑆃𑆱𑆳𑆩𑆳𑆤𑇀𑆪𑆂 𑆤𑆤𑆶 𑇅 𑆆𑆯𑇀𑆮𑆫𑆱𑆁𑆑𑆬𑇀𑆥𑆳𑆢𑆶𑆢𑇀𑆨𑆷𑆠𑆂𑇅 𑆃𑆠𑆂 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆓𑆸𑆲𑆵𑆠𑆾 𑆨𑆳𑆓𑆂 𑆥𑆶𑆤𑆂 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆓𑇀𑆫𑆱𑇀𑆡𑆾 𑆘𑆳𑆠𑆂𑇅 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆤𑆳𑆁 𑆃𑆯𑆑𑇀𑆠𑆠𑇀𑆮𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆩𑆳𑆟𑆵𑆑𑆸𑆠𑆩𑇀𑇅 𑆠𑆠𑆂 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤𑆂 𑆫𑆳𑆘𑆳𑆤𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴 𑆐𑆢𑆳𑆫𑇀𑆪𑆼𑆟 𑆱𑆁𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟𑆁 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆁 𑆃𑆥𑆤𑆵𑆠𑆮𑆤𑇀𑆠𑆂𑇅

𑆠𑆡𑆳𑆥𑆴 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆂 𑆠𑆼𑆰𑆳𑆁 𑆥𑆫𑆳𑆘𑆪𑆁 𑆤𑆳𑆕𑇀𑆓𑆵𑆑𑆶𑆫𑇀𑆮𑆤𑇀𑆠𑆴 𑇅 𑆫𑆳𑆘𑆳𑆥𑆴 𑆱𑆁𑆥𑆷𑆫𑇀𑆟𑆁 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆳𑆱𑆁 𑆤 𑆄𑆥𑇀𑆠𑆮𑆳𑆤𑇀 𑇅 𑆮𑆳𑆢𑆂 𑆥𑆶𑆤𑆂 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑆧𑇀𑆣𑆂𑇅 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤𑆂 𑆱𑆁𑆮𑆳𑆢𑆳𑆠𑇀 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆑𑇀 𑆯𑆴𑆮𑆩𑆤𑇀𑆢𑆴𑆫𑆁 𑆓𑆠𑇀𑆮𑆳 “ 𑆱𑇀𑆮𑆳𑆩𑆴𑆤𑇀! 𑆮𑆼𑆢𑆪𑆳𑆓𑆤𑆴𑆤𑇀𑆢𑆳𑆥𑆫𑆳𑆪𑆟𑆳𑆤𑇀 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆤𑇀 𑆮𑆴𑆘𑆴𑆠𑇀𑆪 𑆠𑇀𑆮𑆠𑇀 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆴𑆰𑇀𑆜𑆳 𑆮𑆴𑆯𑇀𑆮𑆮𑇀𑆪𑆳𑆥𑆵 𑆨𑆮𑆠𑇀𑆮𑆴𑆠𑆴 𑆃𑆤𑆶𑆓𑆸𑆲𑇀𑆟𑆳𑆠𑆶” 𑆅𑆠𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑇀𑆡𑆴𑆠𑆮𑆤𑇀𑆠𑆂𑇅

𑆮𑆳𑆢𑆂 𑆩𑆶𑆲𑆶𑆫𑇀𑆥𑇀𑆫𑆳𑆫𑆧𑇀𑆣𑆂𑇅 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤𑆂 𑆃𑆮𑆾𑆖𑆤𑇀-” 𑆨𑆮𑆠𑇀𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆳𑆤𑇀𑆠𑆳𑆂 𑆠𑆳𑆬𑆥𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆮𑆴𑆬𑆴𑆒𑇀𑆪 𑆮𑆽𑆔𑆳𑆤𑆢𑇀𑆪𑆳𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆑𑇀𑆰𑆴𑆥𑆤𑇀𑆠𑆶 𑇅 𑆃𑆲𑆩𑆥𑆴 𑆩𑆠𑇀𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆳𑆤𑇀𑆠𑆁 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆥𑇀𑆫𑆑𑇀𑆰𑆼𑆥𑆪𑆳𑆩𑆴𑇅 𑆪𑆠𑇀 𑆠𑆳𑆬𑆥𑆠𑇀𑆫𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆮𑆳𑆲𑆳𑆠𑇀 𑆃𑆨𑆴𑆩𑆶𑆒𑆵𑆑𑆸𑆠𑇀𑆪 𑆖𑆬𑆴𑆠𑆶𑆁 𑆯𑆑𑇀𑆤𑆾𑆠𑆴 𑆠𑆢𑆼𑆮 𑆱𑆠𑇀𑆪𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆳𑆤𑇀𑆠𑆂 “ 𑆅𑆠𑆴 𑇅 𑆠𑆠𑇀𑆫𑆳𑆥𑆴 𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤 𑆍𑆮 𑆮𑆴𑆘𑆼𑆠𑆳𑆫𑆂𑇅 𑆠𑆡𑆳𑆥𑆴 𑆯𑇀𑆫𑆩𑆟𑆳𑆂 𑆤𑆳𑆕𑇀𑆓𑆵𑆑𑆸𑆠𑆮𑆤𑇀𑆠𑆂𑇅 𑆠𑆡𑆽𑆮 𑆠𑆼𑆰𑆳𑆁 𑆱𑆴𑆢𑇀𑆣𑆳𑆤𑇀𑆠𑆳𑆤𑇀 𑆠𑆳𑆬𑆥𑆠𑇀𑆫𑆼 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑇀𑆮𑆳 𑆃𑆓𑇀𑆤𑆿 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆑𑇀𑆰𑆴𑆥𑆤𑇀 𑇅 𑆠𑆼𑆰𑆳𑆁 𑆠𑆳𑆬𑆥𑆠𑇀𑆫𑆁 𑆃𑆓𑇀𑆤𑆴𑆢𑆳𑆲𑆑𑆾 𑆘𑆳𑆠𑆂𑇅

𑆱𑆩𑇀𑆧𑆤𑇀𑆣𑆴𑆤𑆂 𑆃𑆤𑆼𑆤 𑆬𑆴𑆒𑆴𑆠𑆮𑆤𑇀𑆠𑆂--

“𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆟𑆳𑆂 𑆱𑆿𑆒𑇀𑆪𑆼𑆤 𑆮𑆫𑇀𑆣𑆤𑇀𑆠𑆳𑆩𑇀 𑇅 𑆩𑆳𑆤𑆮𑆳𑆂 𑆥𑆯𑆮𑆯𑇀𑆖 𑆱𑆶𑆒𑆁 𑆘𑆵𑆮𑆤𑇀𑆠𑆶 𑇅” 𑆃𑆠𑆂 𑆃𑆱𑇀𑆩𑆳𑆑𑆁 𑆢𑆼𑆯𑆼 𑆩𑆠𑆧𑆳𑆲𑆶𑆬𑇀𑆪𑆁 𑆮𑆫𑇀𑆠𑆠𑆼 𑆖𑆼𑆢𑆥𑆴 𑆩𑆠𑆬𑆑𑇀𑆰𑇀𑆪𑆁 𑆅𑆢𑆩𑆼𑆮𑇅

“𑆓𑆾𑆧𑇀𑆫𑆳𑆲𑇀𑆩𑆟𑆼𑆨𑇀𑆪𑆂 𑆯𑆶𑆨𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪𑆩𑇀 𑇅 𑆬𑆾𑆑𑆳𑆂 𑆱𑆩𑆱𑇀𑆠𑆳𑆂 𑆱𑆶𑆒𑆴𑆤𑆾 𑆨𑆮𑆤𑇀𑆠𑆶”𑇅

𑆃𑆥𑆳𑆫𑆑𑆫𑆶𑆟𑆳𑆱𑆴𑆤𑇀𑆣𑆶𑆁 𑆘𑇀𑆚𑆳𑆤𑆢𑆁 𑆯𑆳𑆤𑇀𑆠𑆫𑆷𑆥𑆴𑆟𑆩𑇀𑇅

*𑆯𑇀𑆫𑆵 𑆖𑆤𑇀𑆢𑇀𑆫𑆯𑆼𑆒𑆫𑆓𑆶𑆫𑆶𑆁 𑆥𑇀𑆫𑆟𑆩𑆳𑆩𑆴 𑆩𑆶𑆢𑆳𑆮𑆲𑆩𑇀 𑇆

𑆑𑆚𑇀𑆖𑆴𑆥𑆫𑆩𑆳𑆖𑆳𑆫𑇀𑆪𑆮𑆽𑆨𑆮𑆳𑆠𑇀 𑆃𑆤𑆷𑆢𑇀𑆪...

By :- Savita Sajjan

Adapting Dinacharya for better health and Disease Prevention.

Daily regimen "Dinacharya" and seasonal regimen "Ritucharya" are two ways recommended by Ayurveda for maintaining a healthy life style which is economical too. These two regimen ensure that we act and think of our happiness. In this article we shall touch on Dinacharya concept.

The following sentences by Acharya Susruta mentions the causes of epidemic diseases,

प्रसङ्गाद्गात्रसंस्पर्शान्निश्वासात् सहभोजनात् |	𑆥𑇀𑆫𑆱𑆕𑇀𑆓𑆳𑆢𑇀𑆓𑆳𑆠𑇀𑆫𑆱𑆁𑆱𑇀𑆥𑆫𑇀𑆯𑆳𑆤𑇀𑆤𑆴𑆯𑇀𑆮𑆳𑆱𑆳𑆠𑇀 𑆱𑆲𑆨𑆾𑆘𑆤𑆳𑆠𑇀 |
सहशय्यासनाच्चापि वस्त्रमाल्यानुलेपनात् ||३३||	𑆱𑆲𑆯𑆪𑇀𑆪𑆳𑆱𑆤𑆳𑆖𑇀𑆖𑆳𑆥𑆴 𑆮𑆱𑇀𑆠𑇀𑆫𑆩𑆳𑆬𑇀𑆪𑆳𑆤𑆶𑆬𑆼𑆥𑆤𑆳𑆠𑇀 ||𑇓𑇓||
कुष्ठं ज्वरश्च शोषश्च नेत्राभिष्यन्द एव च |	𑆑𑆶𑆰𑇀𑆜𑆁 𑆘𑇀𑆮𑆫𑆯𑇀𑆖 𑆯𑆾𑆰𑆯𑇀𑆖 𑆤𑆼𑆠𑇀𑆫𑆳𑆨𑆴𑆰𑇀𑆪𑆤𑇀𑆢 𑆍𑆮 𑆖 |
औपसर्गिकरोगाश्च सङ्क्रामन्ति नरान्नरम् ||३४|| (सु.सं नि ५/३३-३४)	𑆐𑆥𑆱𑆫𑇀𑆓𑆴𑆑𑆫𑆾𑆓𑆳𑆯𑇀𑆖 𑆱𑆕𑇀𑆑𑇀𑆫𑆳𑆩𑆤𑇀𑆠𑆴 𑆤𑆫𑆳𑆤𑇀𑆤𑆫𑆩𑇀 ||𑇓𑇔|| (𑆱𑆶.𑆱𑆁 𑆤𑆴 𑇕/𑇓𑇓-𑇓𑇔)

Prasangat- Contact with other Body, Gatrasamsparshanat- contact with sense organ, Nishwasat- Droplet infection, Sahabhojanat- Eating from a Single plate, Sahashayyat- Common use of beds /bedsheets /pillows, SahaAsanat- Use of infected seats in public transport or public buildings & facilities, Vastra- Use of shared clothes, Malya- shared ornaments, Anulepa- Use of shared Soaps, cosmetics.

1. Dinacharya

a. Wake up at brahmi muhurtha, (The period between 1 hour 36 min. before the sunrise and 48 min. before sunrise, i.e. between 3.30 am and 5.30 am)

b. Abhyanga / Daily oil massage (on ears, head & feet)

अभ्यङ्गं आचरेत् नित्यं, स जराश्रमवातहा।	𑆃𑆨𑇀𑆪𑆕𑇀𑆓𑆁 𑆄𑆖𑆫𑆼𑆠𑇀 𑆤𑆴𑆠𑇀𑆪𑆁, 𑆱 𑆘𑆫𑆳𑆯𑇀𑆫𑆩𑆮𑆳𑆠𑆲𑆳।
दृष्टिप्रसाद पुष्टि आयु:स्वप्नसुत्वक्त्वदार्ढ्यकृत्॥	𑆢𑆸𑆰𑇀𑆛𑆴𑆥𑇀𑆫𑆱𑆳𑆢 𑆥𑆶𑆰𑇀𑆛𑆴 𑆄𑆪𑆶:𑆱𑇀𑆮𑆥𑇀𑆤𑆱𑆶𑆠𑇀𑆮𑆑𑇀𑆠𑇀𑆮𑆢𑆳𑆫𑇀𑆞𑇀𑆪𑆑𑆸𑆠𑇀॥
शिर: श्रवणपादेषु तं विशेषेण शीलयेत्। (अ ह सू २/८-९)	𑆯𑆴𑆫: 𑆯𑇀𑆫𑆮𑆟𑆥𑆳𑆢𑆼𑆰𑆶 𑆠𑆁 𑆮𑆴𑆯𑆼𑆰𑆼𑆟 𑆯𑆵𑆬𑆪𑆼𑆠𑇀। (𑆃 𑆲 𑆱𑆷 𑇒/𑇘-𑇙)

It delays ageing, relieves exertion & vata (aches and pains), improves vision, nourishes body tissues, induces sleep, protects from Kaphavata disorders, Nourishes all the dhatus and improves skin tone and complexion.

अभ्यङ्गो मार्दवकरः कफवातनिरोधनः |	𑆃𑆨𑇀𑆪𑆕𑇀𑆓𑆾 𑆩𑆳𑆫𑇀𑆢𑆮𑆑𑆫𑆂 𑆑𑆦𑆮𑆳𑆠𑆤𑆴𑆫𑆾𑆣𑆤𑆂 |
धातूनां पुष्टिजननो मृजावर्णबलप्रदः ||३०|| अ ह सू २/३०	𑆣𑆳𑆠𑆷𑆤𑆳𑆁 𑆥𑆶𑆰𑇀𑆛𑆴𑆘𑆤𑆤𑆾 𑆩𑆸𑆘𑆳𑆮𑆫𑇀𑆟𑆧𑆬𑆥𑇀𑆫𑆢𑆂 ||𑇓𑇐|| 𑆃 𑆲 𑆱𑆷 𑇒/𑇓𑇐

c.Nasya and Karna pooran : Nasya is (Errhine Therapy) instilling medicated/plain unctuous substance (oil/ghee in general) through nose. Pratimarsha Nasya is type of Sinha Nasya with minimal quantity of any sneha,i.e oil or ghee instillation , indicated for daily practice to eliminate the vitiated doshas situated in the head. Acts as "Natural Mask'' – a thin layer of protection both as a physical and chemical barrier without disturbing the normal ventilation, maintaining the nasal pH and hence enhancing the antimicrobial action. Recommendation : 2-4 drops of Sesame oil, coconut oil, ghee in each nostril early in the morning or evening. It curbs vata and kapha. Everyone including children and elderly can include nasya in their routine.

d. Karnapoorana-(Ear drops) – Pouring warm oil into the ear canal gently and slowly as a therapy, an essential part of a healthy quotidian routine, for preservation of health of the auditory organs.

e. Use of Hot water- उष्णोदक

यत् क्वाथ्यमानं निर्वेगं निष्फेनं निर्मलं लघु ||४०||	𑆪𑆠𑇀 𑆑𑇀𑆮𑆳𑆡𑇀𑆪𑆩𑆳𑆤𑆁 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆼𑆓𑆁 𑆤𑆴𑆰𑇀𑆦𑆼𑆤𑆁 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆩𑆬𑆁 𑆬𑆔𑆶 ||𑇔𑇐||
चतुर्भागावशेषं तु तत्तोयं गुणवत् स्मृतम् |४१| सु सं . सू ४५/४१	𑆖𑆠𑆶𑆫𑇀𑆨𑆳𑆓𑆳𑆮𑆯𑆼𑆰𑆁 𑆠𑆶 𑆠𑆠𑇀𑆠𑆾𑆪𑆁 𑆓𑆶𑆟𑆮𑆠𑇀 𑆱𑇀𑆩𑆸𑆠𑆩𑇀 |𑇔𑇑| 𑆱𑆶 𑆱𑆁 . 𑆱𑆷 𑇔𑇕/𑇔𑇑

Heat water on low flame without boiling.

कफमेदोऽनिलामघ्नं दीपनं बस्तिशोधनम् ||३९||	𑆑𑆦𑆩𑆼𑆢𑆾𑇁𑆤𑆴𑆬𑆳𑆩𑆔𑇀𑆤𑆁 𑆢𑆵𑆥𑆤𑆁 𑆧𑆱𑇀𑆠𑆴𑆯𑆾𑆣𑆤𑆩𑇀 ||𑇓𑇙||
श्वासकासज्वरहरं पथ्यमुष्णोदकं सदा |४०| सु सं. सू ४५/४०	𑆯𑇀𑆮𑆳𑆱𑆑𑆳𑆱𑆘𑇀𑆮𑆫𑆲𑆫𑆁 𑆥𑆡𑇀𑆪𑆩𑆶𑆰𑇀𑆟𑆾𑆢𑆑𑆁 𑆱𑆢𑆳 |𑇔𑇐| 𑆱𑆶 𑆱𑆁. 𑆱𑆷 𑇔𑇕/𑇔𑇐

It helps in digestion, is Basti shodhak, i.e., clears and removes obstruction of urine, kapha vatahara, Shwas kaasa hara (Cures Cough and bronchial disorders), cures fever also.

To conclude :

आचार: परमोधर्म: सर्वेषामिति निश्चय:।	𑆄𑆖𑆳𑆫: 𑆥𑆫𑆩𑆾𑆣𑆫𑇀𑆩: 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆼𑆰𑆳𑆩𑆴𑆠𑆴 𑆤𑆴𑆯𑇀𑆖𑆪:।

Good conduct is greater than any other virtue in humans. Following a daily routine & a systemic life style as guided by the shastras, every person, family and society as a whole shall be fee from all diseases.

"सङ्घे शक्ति: कलौ युगे" meaning in Kaliyuga unity of whole society is a strength to prevent from epidemic diseases.

By :- Dr.Anitha

संस्कृतसाहित्यवाहिनी / ಸಂಸ್ಕೃತಸಾಹಿತ್ಯವಾಹಿನೀ

अपारेकाव्यसंसारे कविरेकः प्रजापतिः ।
यथास्मै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते ॥

साहित्यं नाम शब्दार्थयोः सहितभावः । शब्दार्थयोः मञ्जुलसामरस्यं साहित्यम् | जगति उपलब्धेषु सर्वेष्वपि साहित्येषु संस्कृतभाषासाहित्यं प्राचीनतममिति उच्यते । संस्कृत भाषासाहित्यस्य मूलतः नैकाः शाखाः दृश्यन्ते । स्थूलतया वैदिकसाहित्यं तथा लौकिकसाहित्यम् इति विभागः क्रियते । काव्यं नाम कवेः कर्म । तत्र श्रव्यदृश्यं चेति विभागद्वयं भवति । श्रव्यं गद्यपद्यमिश्रं चेति त्रिविधम् । महाकाव्यखण्डकाव्यमुक्तकादिप्रभेदात् पद्यम् बहुविधम् । कथाख्यायिका इति गद्यं द्विविधम् । गद्यपद्यमिश्रितं मिश्रं अथवा चम्पूरिति अभिधीयते । दृश्यकाव्यं रूपकं नाम्ना प्रसिद्धम् । दशरूपकाणि तथा अष्टादशउपरूपकाणि अत्र अन्तर्भवति ।

संस्कृतकाव्यसरस्वती असङ्ख्यातकविभिः विरचितसुकृतिभिः शोभायमाना जगन्मनोहारिणी च अस्ति । तत्रादौ महर्षिवाल्मीकेः रामायणम् आदिकाव्यमिति विख्यातम् । भारतवर्षस्य प्रथमम् आदिकाव्यम् इदम् । अत्र श्रीरामस्य चरितं मुनिना वर्णितम् । अस्मिन् महाकाव्ये सप्तकाण्डाः चतुर्विंशसहस्राणि पद्यानि सन्ति । सर्वेषामेव काव्यादिग्रन्थानाम् उपजीव्यकाव्यं रामायणम् ।

महर्षिव्यासविरचितं महाभारतं भारतवर्षस्य द्वितीयं महाकाव्यम् । जयनामेतिहासस्य भारतनाम आख्यानस्य च सङ्ग्रहत्वात् महाभारतमिति उच्यते । अष्टादशपर्वाणि तथा लक्षाधिकश्लोकाः अस्मिन् बृहत्काव्ये सन्ति । पाण्डवानां जन्मदारभ्य मोक्षपर्यन्ता कथात्र वर्णिता । यथा रामायणम् उत्तरवर्तिग्रन्थानाम् उपजीव्यम् तथैव महाभारतमपि उपजीव्यमेव । रामायणमहाभारतग्रन्थद्वयस्य अध्ययनेन भारतीयसंस्कृतेः दर्शनं प्राप्तुं शक्यते । अनयोः ग्रन्थयोः प्रेरणया रचितानि बहूनि काव्यानि तथा अन्यान्यपि काव्यानि रसज्ञानां हृदयरञ्जकानि सन्ति । "जीयात् गीर्वाणभारती"

ಅಪಾರೇಕಾವ್ಯಸಂಸಾರೇ ಕವಿರೇಕಃ ಪ್ರಜಾಪತಿಃ ।
ಯಥಾಸ್ಮೈ ರೋಚತೇ ವಿಶ್ವಂ ತಥೇದಂ ಪರಿವರ್ತತೇ ॥

ಸಾಹಿತ್ಯಂ ನಾಮ ಶಬ್ದಾರ್ಥಯೋಃ ಸಹಿತಭಾವಃ । ಶಬ್ದಾರ್ಥಯೋಃ ಮಞ್ಜುಲಸಾಮರಸ್ಯಂ ಸಾಹಿತ್ಯಮ್ | ಜಗತಿ ಉಪಲಬ್ಧೇಷು ಸರ್ವೇಷ್ವಪಿ ಸಾಹಿತ್ಯೇಷು ಸಂಸ್ಕೃತಭಾಷಾಸಾಹಿತ್ಯಂ ಪ್ರಾಚೀನತಮಮಿತಿ ಉಚ್ಯತೇ । ಸಂಸ್ಕೃತ ಭಾಷಾಸಾಹಿತ್ಯಸ್ಯ ಮೂಲತಃ ನೈಕಾಃ ಶಾಖಾಃ ದೃಶ್ಯನ್ತೇ । ಸ್ಥೂಲತಯಾ ವೈದಿಕಸಾಹಿತ್ಯಂ ತಥಾ ಲೌಕಿಕಸಾಹಿತ್ಯಮ್ ಇತಿ ವಿಭಾಗಃ ಕ್ರಿಯತೇ । ಕಾವ್ಯಂ ನಾಮ ಕವೇಃ ಕರ್ಮ । ತತ್ರ ಶ್ರವ್ಯದೃಶ್ಯಂ ಚೇತಿ ವಿಭಾಗದ್ವಯಂ ಭವತಿ । ಶ್ರವ್ಯಂ ಗದ್ಯಪದ್ಯಮಿಶ್ರಂ ಚೇತಿ ತ್ರಿವಿಧಮ್ । ಮಹಾಕಾವ್ಯಖಣ್ಡಕಾವ್ಯಮುಕ್ತಕಾದಿಪ್ರಭೇದಾತ್ ಪದ್ಯಮ್ ಬಹುವಿಧಮ್ । ಕಥಾಖ್ಯಾಯಿಕಾ ಇತಿ ಗದ್ಯಂ ದ್ವಿವಿಧಮ್ । ಗದ್ಯಪದ್ಯಮಿಶ್ರಿತಂ ಮಿಶ್ರಂ ಅಥವಾ ಚಮ್ಪೂರಿತಿ ಅಭಿಧೀಯತೇ । ದೃಶ್ಯಕಾವ್ಯಂ ರೂಪಕಂ ನಾಮ್ನಾ ಪ್ರಸಿದ್ಧಮ್ । ದಶರೂಪಕಾಣಿ ತಥಾ ಅಷ್ಟಾದಶಉಪರೂಪಕಾಣಿ ಅತ್ರ ಅನ್ತರ್ಭವತಿ ।

ಸಂಸ್ಕೃತಕಾವ್ಯಸರಸ್ವತೀ ಅಸಙ್ಖ್ಯಾತಕವಿಭಿಃ ವಿರಚಿತಸುಕೃತಿಭಿಃ ಶೋಭಾಯಮಾನಾ ಜಗನ್ಮನೋಹಾರಿಣೀ ಚ ಅಸ್ತಿ । ತತ್ರಾದೌ ಮಹರ್ಷಿವಾಲ್ಮೀಕೇಃ ರಾಮಾಯಣಮ್ ಆದಿಕಾವ್ಯಮಿತಿ ವಿಖ್ಯಾತಮ್ । ಭಾರತವರ್ಷಸ್ಯ ಪ್ರಥಮಮ್ ಆದಿಕಾವ್ಯಮ್ ಇದಮ್ । ಅತ್ರ ಶ್ರೀರಾಮಸ್ಯ ಚರಿತಂ ಮುನಿನಾ ವರ್ಣಿತಮ್ । ಅಸ್ಮಿನ್ ಮಹಾಕಾವ್ಯೇ ಸಪ್ತಕಾಣ್ಡಾಃ ಚತುರ್ವಿಂಶಸಹಸ್ರಾಣಿ ಪದ್ಯಾನಿ ಸನ್ತಿ । ಸರ್ವೇಷಾಮೇವ ಕಾವ್ಯಾದಿಗ್ರನ್ಥಾನಾಮ್ ಉಪಜೀವ್ಯಕಾವ್ಯಂ ರಾಮಾಯಣಮ್ ।

ಮಹರ್ಷಿವ್ಯಾಸವಿರಚಿತಂ ಮಹಾಭಾರತಂ ಭಾರತವರ್ಷಸ್ಯ ದ್ವಿತೀಯಂ ಮಹಾಕಾವ್ಯಮ್ । ಜಯನಾಮೇತಿಹಾಸಸ್ಯ ಭಾರತನಾಮ ಆಖ್ಯಾನಸ್ಯ ಚ ಸಙ್ಗ್ರಹತ್ವಾತ್ ಮಹಾಭಾರತಮಿತಿ ಉಚ್ಯತೇ । ಅಷ್ಟಾದಶಪರ್ವಾಣಿ ತಥಾ ಲಕ್ಷಾಧಿಕಶ್ಲೋಕಾಃ ಅಸ್ಮಿನ್ ಬೃಹತ್ಕಾವ್ಯೇ ಸನ್ತಿ । ಪಾಣ್ಡವಾನಾಂ ಜನ್ಮದಾರಭ್ಯ ಮೋಕ್ಷಪರ್ಯನ್ತಾ ಕಥಾತ್ರ ವರ್ಣಿತಾ । ಯಥಾ ರಾಮಾಯಣಮ್ ಉತ್ತರವರ್ತಿಗ್ರನ್ಥಾನಾಮ್ ಉಪಜೀವ್ಯಮ್ ತಥೈವ ಮಹಾಭಾರತಮಪಿ ಉಪಜೀವ್ಯಮೇವ । ರಾಮಾಯಣಮಹಾಭಾರತಗ್ರನ್ಥದ್ವಯಸ್ಯ ಅಧ್ಯಯನೇನ ಭಾರತೀಯಸಂಸ್ಕೃತೇಃ ದರ್ಶನಂ ಪ್ರಾಪ್ತುಂ ಶಕ್ಯತೇ । ಅನಯೋಃ ಗ್ರನ್ಥಯೋಃ ಪ್ರೇರಣಯಾ ರಚಿತಾನಿ ಬಹೂನಿ ಕಾವ್ಯಾನಿ ತಥಾ ಅನ್ಯಾನ್ಯಪಿ ಕಾವ್ಯಾನಿ ರಸಜ್ಞಾನಾಂ ಹೃದಯರಞ್ಜಕಾನಿ ಸನ್ತಿ । "ಜೀಯಾತ್ ಗೀರ್ವಾಣಭಾರತೀ"

Sanskrit is an ancient language. Literary compositions are very vast in Sanskrit, which comprises of Vedic literature followed by classical literature. The word Kavya in Sanskrit popularly means a poet's work. The term Kavya includes all artistic forms of literary creations. The great epics Ramayana and Mahabharata composed by Vakmikimaharshi and Vedavyasa are chief source of inspiration for the later poets to compose the works in Sanskrit language and also in other languages. The literary compositions (padya, gadya, champu, rupaka etc.,) are indeed a great feast to the readers.

Parts of Body - Trunk / ಧಡ

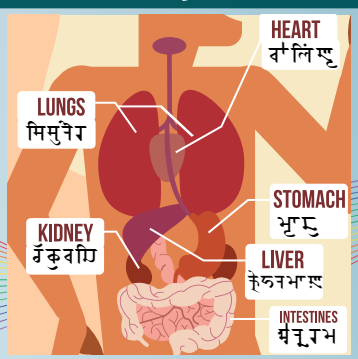

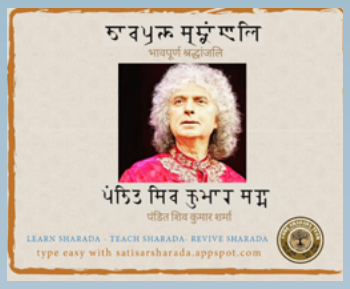

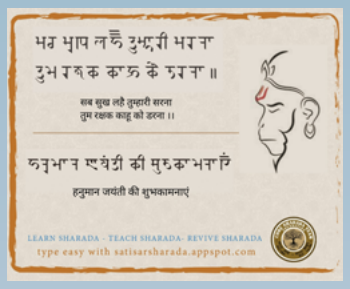

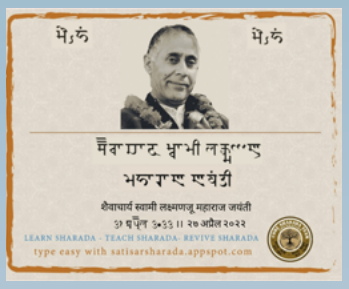

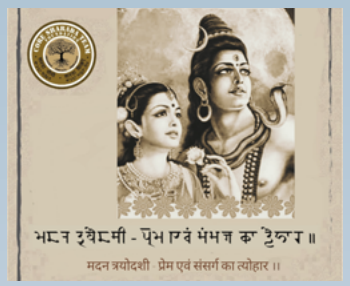

DONATE

If you appreciate the efforts by The Core Sharada Team Foundation for the revival of Sharada Script, Kindly Donate generously.

Core Sharada Team Foundation
HDFC Bank,Airport Rd., Bangalure
Account No: 50200054809336
IFSC : HDFC0000075
(RTGS / NEFT)

(Income Tax exemption under 80G)
Approval number- AAJCC1659DF20206
12-Clause (iv) of first provison to sub-section (5) of section 80G

Maatrika Reader's Feedback

- I read your magazine and I must say that it is an inspirational piece of work. Your magazine will have an audience not only within our community but outside as well and it will be read by someone who will feel forever grateful to have experienced it. You work on promotion of Śāradā script including its dissemination, translation of our scriptures is highly commendable. Our coming generations will be highly benefited from this. Mata Sharda, the 'वागीश्वरी'is with all of us helping us navigate through the journey of knowledge and wisdom and your work in renewing our literature is a path leading to enlightenment for seekers. The Sharda team's commitment and hard work towards the cause is highly appreciated..... ***(Sh.R.K.Jotshi)***

- Articles to be shorter in length to maintain reader interest. All articles must be in Devanagari and Sharada to create interest in the Non Sharada Readers. Editorial must be in Devanagari and Sharada. Most people tend to skip it for want of Sharada knowledge. Also a few handwritten lines in Sharada to create interest in Sharada writing ...... ***(Mrs .Usha Munshi)***

- To popularize the Maatrika in institutions etc. ..***(Mrs Savita Sajjan)***

Activity Cart Of Previous Months

1) CST 's achivements and work done so far was appreciated on social media platform by legendary Sh. Anupam Kher ji.
2) CST annual executive body meeting was held on 16th April.
3) A new batch of learn Sharada lipi with Indica Courses commenced on 9th April.
4) Registration opened for new batch of Sharada pathashala on 27th April.

For Learning Sharada or any other suggestions:-

facebook.com/Core-Sharada-Team-110148770831539
instagram.com/coreshardateam
shardalipi.com
twitter.com/CoreSharada
maatrika.cst@gmail.com
Phone - 98301 35616 / 90089 52222